हरिभूमि
रोहतक भूमि
रोहतक, रविवार 19 अप्रैल 2026

तापमान
अधिकतम 41.9 डिग्री
न्यूनतम 17.6 डिग्री

शहर में आज
- आंबेडकर चौक पर रक्तदान शिविर सुबह 10 बजे
- वार्ड 10 में सफाई अभियान सुबह 8 बजे
- रोडवेज यूनियन की बैठक सुबह 11 बजे

क्लेम की खातिर पिता के शव के लिए भिड़े भाई-बहन

- भाई बोला- हमारे साथ रहते थे पिता इसलिए अंतिम संस्कार का हक हमारा
- क्लेम के लिए अपने साथ ले जाना चाहती है बहन
- बहन बोली- मां की मौत का क्लेम हड़प चुके भाई

रोहतक। ट्रेन हादसे में मौत के बाद पीजीआई में पोस्टमार्टम हाउस के बाहर हुआ हंगामा।

रोहतक। पीजीआई में शनिवार को उस समय अजीब स्थिति बन गई, जब एक बुजुर्ग की डेडबॉडी लेने को लेकर उसके बेटे और बेटी आपस में भिड़ गए। पोस्टमॉर्टम हाउस के बाहर दोनों पक्षों के बीच काफी देर तक हंगामा चलता रहा, जिसके कारण पोस्टमॉर्टम की प्रक्रिया भी प्रभावित हुई। जानकारी के अनुसार, कैथल निवासी प्रेम की शुक्रवार को टोहाना रेलवे स्टेशन पर ट्रेन में चढ़ते समय पैर फिसलने से गंभीर चोट लग गई थी।

हादसे में वह ट्रेन की चपेट में आ गए। रेलवे कर्मचारियों ने उन्हें तुरंत स्थानीय अस्पताल पहुंचाया, जहां से हालत गंभीर होने पर पीजीआई रेफर किया गया। हालांकि, अस्पताल पहुंचने से पहले ही उन्होंने रास्ते में दम तोड़ दिया। शनिवार सुबह पोस्टमॉर्टम के दौरान ही परिजनों के बीच विवाद शुरू हो गया। मृतक के बेटों का कहना था कि पिता का अंतिम संस्कार पैतृक गांव कैथल में किया जाएगा, जबकि बेटी मीनाक्षी शव को टोहाना ले जाने की जिद पर अड़ी रही। देखते ही देखते विवाद बढ़ गया और दोनों पक्ष पोस्टमॉर्टम हाउस के बाहर ही बहस करते रहे।

जानिए... क्या था भाई-बहन का दावा

- मीनाक्षी का कहना है कि पिछले करीब 20 साल से पिता बेटों के पास नहीं, बल्कि बेटियों के साथ रहते थे। उसने भाइयों पर मारपीट के आरोप भी लगाए। मीनाक्षी के अनुसार, भाई पहले भी मां की मौत के बाद मिलने वाला क्लेम हड़प चुके हैं और अब पिता के मामले में भी वही कोशिश कर रहे हैं।
- मृतक के बेटे अमर ने बताया कि परिवार में तीन भाई और पांच बहनें हैं, जिनकी शादी हो चुकी है। उनका कहना है कि पिता उनके साथ रहते थे, इसलिए अंतिम संस्कार का अधिकार भी उनका ही है। उन्होंने आरोप लगाया कि बहन क्लेम की राशि लेने के लिए शव को अपने साथ ले जाना चाहती है।

सभी कानूनी प्रक्रिया पूरी कवाकर सहमति के बाद बेटी को सौंप दिया है शवः एएसआई

रेलवे थाना एएसआई सतीश कुमार ने बताया कि शव का पोस्टमॉर्टम करवाने के बाद सभी कानूनी प्रक्रिया पूरी की गई। दोनों पक्षों से बातचीत के बाद सहमति बनी और शव बेटी मीनाक्षी को सौंप दिया गया।

कार की टक्कर से बाइक सवार युवक की मौत, दूसरा गंभीर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

लाखनमाजरा क्षेत्र में देर शाम एक दर्दनाक सड़क हादसे ने एक परिवार की खुशियां छीन लीं। तेज रफ्तार कार और बाइक की आमने-सामने टक्कर में एक युवक की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि दूसरा गंभीर रूप से घायल हो गया। जानकारी के अनुसार, गांव काहनौर निवासी संजू और भोला बाइक पर सवार होकर किसी काम से जा रहे थे। जैसे ही वे लाखनमाजरा के पास पहुंचे, सामने से आ रही तेज रफ्तार कार ने उनकी बाइक को जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि बाइक बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई और दोनों युवक सड़क पर जा गिरे। हादसे के बाद राहगीरों ने तुरंत दोनों घायलों को संभाला और पुलिस को सूचना दी। गंभीर रूप से घायल युवकों को तुरंत पीजीआई रोहतक पहुंचाया गया, जहां डॉक्टरों ने एक युवक को मृत घोषित कर दिया, जबकि दूसरे का उपचार जारी है। घायल युवक की हालत चिंताजनक बताई जा रही है। पुलिस ने मृतक के परिजनों की शिकायत पर अज्ञात कार चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। फरार चालक की पहचान के लिए आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली जा रही है।

हादसे के बाद कार चालक मौके से फरार

लोगों के अनुसार, हादसे के बाद कार चालक फरार हो गया। कार की रफ्तार काफी तेज थी, जिससे चालक वाहन पर नियंत्रण नहीं रख सका। हादसे के बाद कुछ समय यातायात भी बाधित रहा।

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी की प्रेसवार्ता आज 12 बजे

रोहतक। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी रविवार को 12 बजे भाजपा पार्टी मंगल कमल कार्यालय में पत्रकारवार्ता को संबोधित करेंगे। शनिवार देर शाम अधिकारिक तौर पर इसकी सूचना जारी की गई है। वह पार्टी कार्यकर्ताओं से भी मुलाकात करेंगे।

शांतमई चौक से झज्जर पुल तक जाम ही जाम, आमजन परेशान

रेलवे स्टेशन पर जाने वालों के लिए पैदल चलना भी मुश्किल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

शहर की सबसे व्यस्त सड़कों में गिनी जाने वाली शांतमई चौक से झज्जर पुल तक की दूरी अब लोगों के लिए सिरदर्द बन चुकी है। कभी यह रास्ता शहर की लाइफलाइन माना जाता था, लेकिन आज हालात ऐसे हैं कि यहां से गुजरना किसी चुनौती से कम नहीं। दिन चढ़ते ही सड़क पर वाहनों की लंबी कतारें लग जाती हैं और जाम की स्थिति इतनी भयावह हो जाती है कि पैदल चलना भी मुश्किल हो जाता है। वहीं, रेलवे स्टोशन पर जाने वाले लोगों के लिए भी परेशानी का कारण बन जाती है।

60 फुट की सड़क लेकिन चलने को 30 फुट ही बची

कागजों में यह सड़क 60 फुट चौड़ी है, लेकिन जमीनी हकीकत इससे बिल्कुल उलट है। सड़क के दोनों किनारों पर दुकानदारों द्वारा किए गए अतिक्रमण के कारण इसका आधा हिस्सा ही उपयोग में आ पाता है। दुकानों के बाहर फैला सामान, अस्थायी शेड और फुटपाथ पर कब्जा किए ठेले ये सब मिलकर सड़क को सिकोड़ देते हैं। नतीजतन, जहां दो गाड़ियां आराम से निकल सकती थीं, वहां अब एक गाड़ी को भी निकलने में मशक्कत करनी पड़ती है।

ग्रामीण इलाकों से बढ़ा दबाव

इस सड़क पर ट्रैफिक बढ़ने का एक बड़ा कारण आसपास के गांवों से आने वाले लोग भी हैं। ग्रामीण क्षेत्र के लोग अपने ट्रैक्टर, कार और अन्य वाहनों के साथ शहर में खरीदारी और अन्य कामों के लिए पहुंचते हैं। लेकिन पार्किंग की उचित व्यवस्था न होने के कारण वे अपने वाहन सड़क के किनारे या दुकानों के सामने खड़े कर देते हैं। इससे जाम की स्थिति और भी विकराल हो जाती है।

पार्किंग की कमी बनी समस्या

शहर में पार्किंग की सुविधा बेहद सीमित है। रेलवे स्टेशन पर पार्किंग की व्यवस्था तो है, लेकिन वह भी केवल कुछ लोगों तक ही सीमित रह जाती है। इसके अलावा अन्य जगहों पर पार्किंग का कोई ठोस इंतजाम नहीं है। ऐसे में लोग मजबूर होकर अपने वाहन जहां जगह मिलती है, वहीं खड़े कर देते हैं। खासकर बाजार क्षेत्र में यह समस्या सबसे ज्यादा देखने को मिलती है।

दुकानदारों का अतिक्रमण बढ़ा रहा परेशानी

लोगों का आरोप है कि दुकानदारों द्वारा किए गए अतिक्रमण ने हालात को और खराब कर दिया है। दुकानों के बाहर सड़क तक सामान फैलाना आम बात हो गई है। कई जगहों पर तो अस्थायी निर्माण कर लिए गए हैं, जिससे सड़क की चौड़ाई और कम हो गई है। प्रशासन की ओर से समय-समय पर कार्रवाई की बात जरूर होती है, लेकिन जमीनी स्तर पर इसका असर नजर नहीं आता।

क्या हो सकता है समाधान

इस समस्या का समाधान तभी संभव है जब प्रशासन सख्ती से अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई करे और वैकल्पिक पार्किंग की व्यवस्था सुनिश्चित करे। साथ ही, ट्रैफिक पुलिस की तैनाती बढ़ाने और यातायात नियमों का सख्ती से पालन कराने की जरूरत है। अगर समय रहते इस समस्या पर ध्यान नहीं दिया गया, तो आने वाले दिनों में हालात और भी बदतर हो सकते हैं।

आमजन परेशान प्रशासन मौन

इस पूरे मामले में सबसे ज्यादा परेशानी आम लोगों को झेलनी पड़ रही है। रोजाना इस रास्ते से गुजरने वाले लोग घंटों जाम में फंसे रहते हैं। स्कूली बच्चे, नौकरीपेशा लोग और व्यापारी सभी इस समस्या से त्रस्त हैं। कई बार एंबुलेंस और इमरजेंसी वाहनों को भी जाम में फंसना पड़ता है, जो गंभीर चिंता का विषय है। लोगों का कहना है कि उन्होंने कई बार प्रशासन से शिकायत की है, लेकिन अब तक कोई ठोस समाधान नहीं निकल पाया है। प्रशासन की ओर से न तो अतिक्रमण हटाने की सख्त कार्रवाई की जा रही है और न ही पार्किंग की व्यवस्था को सुधारने के लिए कोई कदम उठाया जा रहा है।

अक्षय तृतीया पर शादियों पर प्रशासन की पैनी नजर, बाल विवाह पर सख्ती : उपायुक्त

रोहतक। अक्षय तृतीया के मौके पर होने वाली शादियों को लेकर जिला प्रशासन पूरी तरह सतर्क हो गया है। उपायुक्त सचिन गुप्ता ने स्पष्ट किया है कि 19 अप्रैल को जिले में आयोजित होने वाले सभी विवाह समारोहों पर प्रशासन की विशेष नजर रहेगी। अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि कहीं भी बाल विवाह की सूचना मिलते ही तुरंत कार्रवाई की जाए। उपायुक्त ने कहा कि इसके लिए प्रशासन ने निगरानी तंत्र को मजबूत किया है और संबंधित विभागों को अलर्ट पर रखा गया है।

■ उपायुक्त बोले नाबालिग की शादी करवाई तो होगी कड़ी कार्रवाई, हेल्पलाइन पर दें सूचना

उपायुक्त ने कहा कि बाल विवाह पूरी तरह प्रतिबंधित है और इसे रोकने के लिए प्रशासन जीरो टॉलरेंस नीति अपना रहा है। बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम 2006 के तहत 18 वर्ष से कम आयु की लड़की और 21 वर्ष से कम आयु के लड़के का विवाह गैरकानूनी है। यह गैर-जमानती अपराध है, जिसमें दोषी को दो वर्ष तक की सजा और एक लाख रुपये तक जुर्माना हो सकता है। प्रशासन ने विवाह से जुड़े सभी पक्षों से अपील की है कि वे सुनिश्चित करें कि उनके माध्यम से किसी भी नाबालिग का विवाह न हो। यदि कहीं भी बाल विवाह की जानकारी मिले तो तुरंत हेल्पलाइन नंबर 181 या 112 पर सूचना दें।

न्यूज डायरी

विश्व धरोहर दिवस पर दिखा प्रतिभा, ज्ञान व संस्कृति का संगम

रोहतक। एचडी पब्लिक स्कूल बहु अकबरपुर में इंटर-हाउस क्विज प्रतियोगिता एवं विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भव्य आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के प्रति जागरूक करना तथा उनके ज्ञान, प्रतिभा और रचनात्मकता को मंच प्रदान करना था। क्विज प्रतियोगिता में विद्यालय के चारों हाउस के विद्यार्थियों ने पूरे उत्साह और प्रतिस्पर्धा भावना के साथ भाग लिया। प्रतियोगिता के दौरान प्रतिभागियों ने इतिहास, संस्कृति और धरोहर से जुड़े प्रश्नों के सटीक उत्तर देकर अपनी बौद्धिक क्षमता का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। विशेष रूप से कक्षा 12वीं की छात्रा इशिका ने प्रभावशाली प्रदर्शन करते हुए सभी का ध्यान आकर्षित किया।

अग्नि सेवा सप्ताह पर पॉज़िट्रॉन हॉस्पिटल में जागरूकता प्रशिक्षण

रोहतक। अग्नि सेवा सप्ताह के अवसर पर मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड द्वारा पॉजिट्रॉन हॉस्पिटल में अग्नि सुरक्षा जागरूकता प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इस वर्ष का विषय था सुरक्षित स्कूल, सुरक्षित अस्पताल और अग्नि सुरक्षा के प्रति जागरूक समाज आग की रोकथाम के लिए एक साथ। प्रशिक्षण सत्र में कंपनी के सुरक्षा विभाग से राहुल श्योराण, बृजेश पांडे, डॉ. मोहित गर्ग, राकेश रंजन और जतिंदर दुबे उपस्थित रहे। कार्यक्रम में अस्पताल के सिक्योरिटी, हाउसकीपिंग एवं नर्सिंग स्टाफ ने सक्रिय भागीदारी निभाई। प्रशिक्षण में प्रतिभागियों को फर्स्ट एड फायर फाइटिंग, फायर एक्सटिंग्विशर के सही उपयोग तथा आपातकालीन स्थिति में सुरक्षित निकासी की विस्तृत जानकारी दी गई। व्यावहारिक प्रदर्शन के माध्यम से स्टाफ को आग लगने की स्थिति में त्वरित एवं प्रभावी प्रतिक्रिया देने के लिए प्रशिक्षित किया गया।

वैश्य स्कूल की भूमिका 96.20% के साथ रही प्रथम

रोहतक। वैश्य पब्लिक स्कूल के दसवीं के विद्यार्थियों ने सीबीएसई द्वारा घोषित परीक्षा परिणाम में बेहतरीन प्रदर्शन किया। भूमिका ने 96.20 प्रतिशत अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान अर्जित किया। कनिष्का ने 95.40 प्रतिशत अंकों के साथ द्वितीय स्थान प्राप्त किया। शौर्य ने 93.60 प्रतिशत अंक हासिल कर तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस अवसर पर संस्था के प्रधान विकास गोयल और प्राचार्या शीतल जैन ने बच्चों को हार्दिक बधाई देते हुए कहा कि देश का सही संभव विकास शिक्षा से ही होता है।

डीएवी शताब्दी पब्लिक स्कूल का शत-प्रतिशत परिणाम

रोहतक। डीएवी सेंटरी पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों ने सीबीएसई कक्षा 10वीं परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए 100% परिणाम हासिल किया। कुल 194 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी और सभी सफल घोषित हुए। विद्यालय की छात्रा अनिका ने 98.6% अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान हासिल किया। सानवी दुआ (97.8%) ने द्वितीय तथा दक्ष (97.6%) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त 92 विद्यार्थियों ने 80% से अधिक अंक प्राप्त कर शानदार प्रदर्शन किया। विषयवार उत्कृष्ट प्रदर्शन में गणित में अंश और गिरीश ने 100 अंक, सामाजिक विज्ञान में खुशी ने 100 अंक, कंप्यूटर में वियान नांगिया, सलोनी शर्मा, रोहित मुंडे और रिद्धि सैनी ने 100 अंक प्राप्त किए।

सीबीएसई परिणाम पर पारितोषिक वितरण समारोह

रोहतक। दसवीं कक्षा के सीबीएसई बोर्ड परीक्षा परिणाम के उपलक्ष्य में जेपी थिएटर में पारितोषिक वितरण समारोह का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। स्कूल प्रबंधन द्वारा 95% से अधिक अंक प्राप्त करने वाले सभी विद्यार्थियों को 50,000 की स्कॉलरशिप प्रदान की गई। उल्लेखनीय है कि लगभग आधी कक्षा ने 90% से अधिक अंक प्राप्त कर विद्यालय का नाम रोशन किया। इस अवसर पर स्कूल के मैनेजिंग डायरेक्टर राजीव मलिक ने स्वयं विद्यार्थियों को स्कॉलरशिप प्रदान की।

डॉ. मनीषा श्रेष्ठ कार्यक्रम अधिकारी के रूप में सम्मानित

रोहतक। राजकीय महाविद्यालय लखनमाजरा के लिए अत्यंत गर्व का विषय है कि महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मनीषा को सत्र 2024–25 हेतु महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक द्वारा श्रेष्ठ कार्यक्रम अधिकारी के रूप में सम्मानित किया गया है। यह सम्मान उनके समर्पण तथा एनएसएस के अंतर्गत किए गए समाजोपयोगी कार्यों का परिणाम है। उनके मार्गदर्शन में स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, वृक्षारोपण, महिला सशक्तिकरण एवं स्वास्थ्य जागरूकता से जुड़े अनेक कार्यक्रम सफलतापूर्वक आयोजित किए गए।

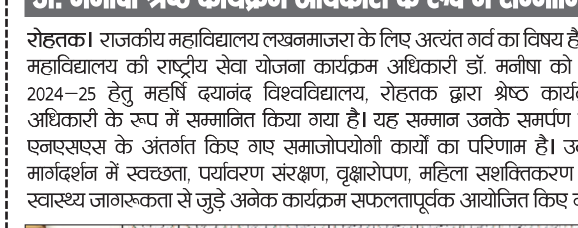

2029 में भाजपा करेगी हार का सामना : भूपेंद्र हुड्डा

रोहतक। पूर्व सीएम भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने कहा है कि महिला आरक्षण बिल 2023 में पास हो गया था और 2024 में लागू हो जाना चाहिए था। लेकिन सरकार का मकसद ठीक नहीं थी, जिसके कारण इसे लागू नहीं किया। 2029 के चुनाव में भाजपा हार का सामना करेगी। वे शनिवार को अपने निवास स्थान पर पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। हुड्डा ने कहा कि किसान को अपनी फसल बेचने के लिए दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। मंडियों में फसल रखने की जगह नहीं है।

स्पोर्टेक 2026 का समापन, कबड्डी चैंपियनशिप में मेकेनिकल बना विजेता

रोहतक। महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय (एमडीयू) के यूनिवर्सिटी इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (यूआईईटी) में वार्षिक खेल उत्सव स्पोर्टेक 2026 का भव्य समापन हुआ। खेल भावना और जबरदस्त उत्साह के साथ आयोजित इस तीन दिवसीय उत्सव में विभिन्न इंजीनियरिंग शाखाओं के विद्यार्थियों ने अपनी खेल प्रतिभा का लोहा मनवाया। उत्सव के अंतिम दिन का मुख्य आकर्षण कबड्डी प्रतियोगिता रही। ईसीई, मैकेनिकल और सीएसई टीमों के बीच राउंड-रॉबिन प्रारूप में कड़े मुकाबले हुए। रोमांचक भिड़ंत के बाद मैकेनिकल इंजीनियरिंग की टीम विजेता बनकर उभरी, जबकि इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग (ईसीई) की टीम ने उपविजेता का खिताब अपने नाम किया। स्पोर्टेक 2026 के दौरान क्रिकेट, एथलेटिक्स, शतरंज, कैरम, टेबल टेनिस, लॉन टेनिस, बैडमिंटन, बास्केटबॉल और पावरलिफ्टिंग जैसी प्रतियोगिताओं का सफल आयोजन किया गया। इसके साथ ही इस बार ई-स्पोर्ट्स और आर्म रेसलिंग जैसे खेलों के प्रति भी विद्यार्थियों में भारी क्रेज देखा गया। इस संपूर्ण आयोजन को सफल बनाने में कार्यक्रम के संयोजक डॉ. योगेश अहलावत एवं खेल निदेशक शकुंतला बेनीवाल की अहम भूमिका रही। उनके मार्गदर्शन में सभी गतिविधियां सुचारू रूप से संपन्न हुईं।

■ इलेक्ट्रानिक्स एंड कम्युनिकेशन की टीम बनी उपविजेता

इंडस पब्लिक स्कूल में हुई अंग्रेजी स्पेल बी प्रतियोगिता

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

इंडस पब्लिक स्कूल में शनिवार को अंग्रेजी स्पेल बी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य विद्यार्थियों को अंग्रेजी शब्दों की सही वर्तनी सीखने और उनके अभ्यास के लिए प्रेरित करना था। प्रतियोगिता में छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और मनोरंजक तरीके से अपनी वर्तनी कौशल व शब्दावली का प्रदर्शन किया। इस दौरान विद्यार्थियों से विभिन्न अंग्रेजी शब्दों की स्पेलिंग पूछी गई, जिनका उन्होंने आत्मविश्वास के साथ उत्तर दिया। विद्यालय के प्रधानाचार्य दीपक कुमार वशिष्ठ ने छात्रों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिताएं विद्यार्थियों में आत्मविश्वास बढ़ाने के साथ-साथ उनकी भाषा क्षमता को भी मजबूत करती हैं। उन्होंने कहा कि समय-समय पर इस तरह के आयोजन होते रहने चाहिए, ताकि छात्र अपने कौशल को निखार सकें और प्रतिस्पर्धात्मक भावना विकसित कर सकें।

■ अंग्रेजी शब्दों की सही वर्तनी सीखने और अभ्यास के लिया प्रेरित

राज्य स्तरीय अंडर-17 कुश्ती चैंपियनशिप आज से शुभारंभ

रोहतक। हरियाणा कुश्ती संघ ने साल 2026 की अंडर-17 (अंडर-17) फ्री स्टाइल, ग्रीको रोमन और महिला हरियाणा राज्य कुश्ती चैंपियनशिप की घोषणा कर दी है। यह प्रतियोगिता 19 अप्रैल से शुरू होगी। कुश्ती संघ के कार्यकारी अध्यक्ष रमेश बोहर ने बताया कि प्रतियोगिता के मैच झज्जर और रोहतक में होंगे। सभी पहलवानों का वजन 19 अप्रैल को सुबह 7:00 बजे से 8:00 बजे के बीच लिया जाएगा। विभिन्न वर्गों के लिए स्थान इस प्रकार निर्धारित किए गए हैं। फ्री स्टाइल (पुरुष) जयबीर अखाड़ा बुपनिया, बहादुरगढ़ (झज्जर)। वजन वर्ग 45, 48, 51, 55, 60, 65, 71, 80, 92 और 110 किलो। ग्रीको-रोमन के इंदर देव कुश्ती अकादमी, बोहर (रोहतक)। वजन वर्ग 45, 48, 51, 55, 60, 65, 71, 80, 92 और 110 किलो। महिला कुश्ती सर छोटू राम स्टेडियम, रोहतक। वजन वर्ग 40, 43, 46, 49, 53, 57, 61, 65, 69 और 73 किलो। संघ ने स्पष्ट किया है कि केवल वही पहलवान भाग ले सकते हैं जिनका जन्म साल 2009-2010 में हुआ है। 2011 में जन्मे पहलवान केवल मेडिकल सर्टिफिकेट और माता-पिता की अनुमति के साथ ही हिस्सा ले सकेंगे। सभी पहलवानों को अपने मूल दस्तावेज (पासपोर्ट, जन्म प्रमाण पत्र, आधार कार्ड) और उनकी फोटोकॉपी साथ लानी होगी। पहलवान के पास हरियाणा राज्य का वैध जन्म प्रमाण पत्र होना अनिवार्य है। यदि प्रमाण पत्र हरियाणा का नहीं है, तो भारतीय कुश्ती महासंघ से सत्यापित दस्तावेज प्रस्तुत करने होंगे।

रोहतक। आयोजित कार्यक्रम में संगीत विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. टीना चावला का स्वागत करते प्राचार्य प्रो. सुरेंद्र सांगवान व अन्य प्रोफेसर। फोटो : हरिभूमि

नेकीराम कॉलेज में आशा भोसले को दी श्रद्धांजलि

रोहतक। पंडित नेकीराम शर्मा राजकीय महाविद्यालय में शनिवार को संगीत जगत की दिग्गज पार्श्व गायिका आशा भोसले की स्मृति में एक भव्य सांस्कृतिक एवं श्रद्धांजलि कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में कॉलेज के विद्यार्थियों और स्टाफ सदस्यों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और अपनी प्रिय गायिका को सुरों के माध्यम से याद किया। प्राचार्य प्रो. सुरेंद्र सांगवान ने दीप प्रज्वलित कर आयोजन की शुरुआत की। उन्होंने कहा कि आशा भोसले केवल एक गायिका नहीं, बल्कि भारतीय संगीत की एक ऐसी संस्था हैं जिनकी आवाज़ ने सात दशकों तक दुनिया पर राज किया है। उनकी बहुमुखी प्रतिभा और मधुर गीत आने वाली पीढ़ियों के लिए हमेशा मार्गदर्शक और प्रेरणा का स्रोत बने रहेंगे। संगीत विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. टीना चावला के कुशल निर्देशन में संगीत विभाग के छात्र-छात्राओं ने आशा भोसले के कालजयी और लोकप्रिय गीतों की प्रस्तुतियाँ दीं।

प्रधान दिमाना ने कुलपति का किया अभिनंदन

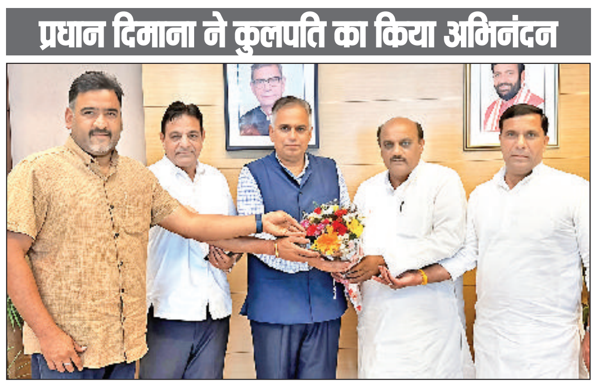

रोहतक। कुलपति प्रो. मिलाप पूनिया से शिष्टाचार भेंट करते जाट संस्था रोहतक के प्रधान गुलाब सिंह दिमाना व अन्य संस्था के पदाधिकारी। फोटो : हरिभूमि

रोहतक। जाट संस्था रोहतक के प्रधान गुलाब सिंह दिमाना के नेतृत्व में संस्था के प्रतिनिधिमंडल ने महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय (एमडीयू) के कुलपति प्रो. मिलाप पूनिया से शिष्टाचार भेंट कर उनका अभिनंदन किया। इस अवसर पर पदाधिकारियों ने कुलपति को पुष्पगुच्छ भेंट कर नई जिम्मेदारी के लिए शुभकामनाएं दीं। प्रतिनिधिमंडल में उपप्रधान धर्मराज, महासचिव नवदीप और परमजीत तेहलान भी शामिल रहे। इस दौरान प्रतिनिधियों ने जाट संस्था के विकास, शिक्षा की गुणवत्ता और छात्र हितों से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर कुलपति से विस्तार से चर्चा की। कुलपति प्रो. मिलाप पूनिया ने प्रतिनिधिमंडल का स्वागत करते हुए कहा कि एमडीयू को राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट संस्थान बनाने के लिए सामूहिक सहयोग जरूरी है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, नवाचार, शोध और कौशल को बढ़ावा देने पर विशेष फोकस किया जाएगा।

रोहतक। पूर्व छात्र वीर सेन बतरा को सम्मानित करते यूसीसी निदेशक प्रो. युद्धवीर, कंप्यूटर साइंसेज विभाग की अध्यक्षा प्रो. प्रीति गुलिया, वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. नसीब सिंह गिल, डॉ. बालकिशन, डॉ. सुखविंद्र व प्राध्यापक सुनित मुखर्जी।

एमडीयू के पूर्व छात्र बतरा ने दिए सफलता के मंत्र

रोहतक। महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय (एमडीयू) के 1985-87 एमएससी गणित बैच के पूर्व छात्र वीर सेन बतरा ने विश्वविद्यालय के डिपार्टमेंट ऑफ कंप्यूटर साइंस एंड एप्लीकेशंस और यूनिवर्सिटी कंप्यूटर सेंटर का दौरा किया। वर्तमान में वे अटलांटा (अमेरिका) में सीनियर मैनेजर के पद पर कार्यरत हैं। उन्होंने अपने करियर की शुरुआत अक्टूबर 1989 में यूसीसी में सिस्टम एनालिस्ट के रूप में की थी और वर्ष 1997 तक यहां सेवाएं देते हुए सीनियर सिस्टम एनालिस्ट के पद तक पहुंचे। इस दौरे के दौरान उन्होंने डीसीएसए और यूसीसी के शिक्षकों, कर्मचारियों और विद्यार्थियों से संवाद किया। उन्होंने अपने पेशेवर अनुभव साझा करते हुए बताया कि बदलती तकनीक के साथ खुद को अपडेट रखना बेहद जरूरी है। उन्होंने छात्रों को संदेश दिया कि सफलता के लिए कड़ी मेहनत, अनुशासन और निरंतर सीखने की आदत बेहद महत्वपूर्ण है।

विडंबना जागरूकता अभियान, इन्फ्लूएंसर और गाने भी बेअसर, जमीनी हकीकत जस की तस

शहर की स्वच्छता रैंकिंग को बेहतर बनाने में बदहाल शौचालय बने रोड़ा, निगम के प्रयासों पर उठ रहे सवाल

गंदगी, बदबू और साफ-सफाई की कमी बन रही परेशानी का कारण

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

शहर की स्वच्छता रैंकिंग को बेहतर बनाने के लिए नगर निगम लगातार प्रयास कर रहा है, लेकिन जमीनी हकीकत कुछ और ही तस्वीर बयां कर रही है। जल्द ही रैंकिंग के लिए सर्वे की टीम भी रोहतक पहुंचेगी। शहर के अनेक सार्वजनिक शौचालयों की हालत बेहद खराब है। गंदगी, बदबू और साफ-सफाई की कमी ने इन सुविधाओं को आमजन के लिए परेशानी का कारण बना दिया है। ऐसे में सवाल उठना लाजमी है कि जब शौचालय ही साफ नहीं रहेंगे तो शहर की स्वच्छता रैंकिंग आखिर कैसे सुधरेगी। नगर निगम द्वारा स्वच्छता को लेकर कई स्तरों पर प्रयास किए जा रहे हैं। डोर-टू-डोर कलेक्शन के साथ-साथ शौचालयों की सफाई के लिए भी व्यवस्थाएं की गई हैं। जागरूकता अभियान चलाए जा रहे हैं, सोशल मीडिया इन्फ्लूएंसरों की मदद ली जा रही है, और प्रसिद्ध सिंगर अमित सैनी रोहतकिया के जरिए स्वच्छता संदेश को लोगों तक पहुंचाने की कोशिश की गई है। इसके बावजूद सार्वजनिक शौचालयों की स्थिति में अपेक्षित सुधार देखने को नहीं मिल रहा। कई जगहों पर शौचालयों में पानी की व्यवस्था नहीं है, सफाई समय पर नहीं होती और रखरखाव पूरी तरह से लापरवाही का शिकार नजर आता है। खासकर बाजारों, बस स्टैंड, पार्कों और भीड़भाड़ वाले इलाकों में बने शौचालयों की हालत सबसे ज्यादा खराब है।

रोहतक। बंद पड़ा शौचालय तथा तहसील में बंद पड़ा है और हुड्डा कंपलेक्स आर्य नगर थाने के पास बंद पड़ा। फोटो : हरिभूमि

निगम बनाम नागरिक जिम्मेदारी

नगर निगम का कहना है कि शौचालयों की सफाई और रखरखाव केवल प्रशासन की जिम्मेदारी नहीं है। आमजन को भी इन सुविधाओं का सही उपयोग करना चाहिए। निगम की ओर से समय-समय पर सफाई के निर्देश दिए जाते हैं और लापरवाही बरतने वालों पर कार्रवाई भी की जाती हैं।

शौचालयों के दरवाजे तक टूटे हुए है

स्थिति यह है कि कई शौचालयों के दरवाजे टूटे हुए हैं, टंकियां खराब हैं और सफाई कर्मियों की नियमित तैनाती नहीं दिखती। महिलाओं के लिए बनाए गए शौचालयों की हालत तो और भी चिंताजनक है, जहां सुरक्षा और स्वच्छता दोनों पर सवाल खड़े हो रहे हैं।

रैंकिंग पर सीधा असर

स्वच्छ भारत मिशन के तहत होने वाली रैंकिंग में सार्वजनिक शौचालयों की स्थिति, उनकी सफाई और उपयोगिता को अहम मानदंड माना जाता है। ऐसे में बदहाल शौचालय सीधे तौर पर शहर की रैंकिंग को प्रभावित कर रहे हैं। केवल प्रचार-प्रसार या जागरूकता अभियान चलाने से स्थिति नहीं सुधरेगी। इसके लिए जमीनी स्तर पर ठोस कदम उठाने होंगे, नियमित निगरानी करनी होगी और नागरिकों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी। तभी शहर वास्तव में स्वच्छ बन सकेगा और स्वच्छता रैंकिंग में सुधार संभव हो पाएगा।

कलानौर अनाज मंडी के पास मिला अज्ञात व्यक्ति का शव

■ एफएसएल टीम ने जुटाए साक्ष्य

कलानौर। अनाज मंडी के समीप शनिवार दोपहर एक अज्ञात व्यक्ति का शव मिलने से क्षेत्र में सनसनी फैल गई। घटना की जानकारी स्थानीय ग्रामीणों ने तुरंत पुलिस को दी, जिसके बाद पुलिस टीम मौके पर पहुंची और स्थिति का जायजा लिया। पुलिस ने आवश्यक कानूनी कार्रवाई पूरी करने के बाद शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए पीजीआई भेज दिया। वहीं, फॉरेंसिक साइंस लैब (एफएसएल) की टीम ने भी घटनास्थल पर पहुंचकर साक्ष्य जुटाए और गहन जांच शुरू की। प्रारंभिक जांच में मृतक की पहचान अभी तक नहीं हो पाई है। पुलिस शव की शिनाख्त के प्रयास कर रही है। अधिकारियों के अनुसार पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के कारणों का स्पष्ट पता चल सकेगा कि यह प्राकृतिक मृत्यु है या किसी अन्य कारण से हुई है।

सूचना

मैं, कमलेश देवी पत्नी श्री राम कुमार निवासी मकान नंबर-1946/34, न्यू विजय नगर, रोहतक बयान करती हूं कि मेरा पुत्र नरेश मेरे कहने-सुनने से बाहर है। इसलिये मैं इसको अपनी चल-अचल सम्पत्ति से बेदखल करती हूं। इससे लेन-देन, व्यवहार करने वाला स्वयं जिम्मेवार होगा। मेरी व मेरे परिवार की कोई जिम्मेवारी नहीं होगी।

कोटा, चंडीगढ़, दिल्ली के बाद अब रोहतक में भी स्पेशल कोचिंग
IIT-JEE | NEET | NDA
6th to 12th Class & Board
ADMISSION OPEN
Get Direct Scholarship For JEE/NEET Courses Based On 10th CBSE Board 2026 Result
DIRECT SCHOLARSHIP

PERCENTAGE	SCHOLARSHIP
Above 95%	100%
85% - 94%	95%
70% - 84%	80%

1 WEEK FREE TRIAL CLASS BEFORE ADMISSION
Day Boarding Classes for 6th to 12th
KOTA CLASSES
144-L Model Town Near CR Polytechnic College, Rohtak M. 97285-44433

शहर में 'दुश्मन' के कैमरों की तलाश

निजी व सरकारी सभी तरह से कैमरों का हो रहा ऑडिट

गाजियाबाद, सोनीपत, अंबाला और राजस्थान में मिले जासूसी कैमरों ने खड़े किए सरकार के कान

जासूसी कैमरे मिलने से बड़ी चिंता सरकार की यह हो गई है कि कहीं, दुश्मनों ने उसके ही नेटवर्क में तो सेंध नहीं लगा दी या फिर लोगों ने जिन कैमरों को अपनी सुरक्षा के लिए लगाया उन्हें तो हैक नहीं कर लिया। पब्लिक में अफरा-तफरी न हो इसलिए सरकार गुपचुप तरीके पड़ताल में जुट गई है। लोकल इंटेलीजेंस यूनिट की इसमें मदद ली जा रही है।

■ करीब **250** जगह बाजारों और सड़कों पर लगाए कैमरे
■ रोहतक में 2016 में **2.32** करोड़ का हुआ था टेंडर

एआई जनरेटेड फोटो

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

प्रदेश में सुरक्षा के लिए लगाए गए सीसीटीवी कैमरे अब प्रशासन के लिए चिंता का कारण बनते जा रहे हैं। हाल ही में गाजियाबाद, सोनीपत, अंबाला व राजस्थान में संदिग्ध और जासूसी गतिविधियों से जुड़े कैमरों के मिलने के बाद राज्य सरकार के कान खड़े हो गए हैं। जासूसी कैमरे मिलने से बड़ी चिंता सरकार की यह हो गई है कि कहीं दुश्मनों ने उसके ही नेटवर्क में तो सेंध नहीं लगा ली या फिर लोगों ने जिन कैमरों को अपनी सुरक्षा के लिए लगाया उन्हें तो हैक नहीं कर लिया गया। पब्लिक में अफरा-तफरी न हो इस लिए सरकार गुपचुप तरीके पड़ताल में जुट गई है। लोकल इंटेलीजेंस यूनिट की इसमें मदद ली जा रही है। सूत्रों ने बताया कि कई जिलों में हुई घटनाओं के बाद नगर निगम और पुलिस प्रशासन सतर्कता बरत रहा है। सरकारी कैमरों के साथ-साथ निजी प्रतिष्ठानों, दुकानों और घरों में लगे कैमरों की भी जांच की तैयारी कर ली गई है। अधिकारियों का मानना है कि कई बार निजी कैमरे बिना उचित सुरक्षा प्रोटोकॉल के लगाए जाते हैं, जिनका दुरुपयोग कर संवेदनशील सूचनाएं एकत्र की जा सकती हैं। ऐसे कैमरे साइबर हमलों के जरिए हैक होकर जासूसी का माध्यम बन सकते हैं। सरकार के निर्देश पर विभिन्न जिलों में पुलिस और तकनीकी विशेषज्ञों की टीमों का गठन किया गया है, जो कैमरों की गुणवत्ता, डेटा स्टोरेज और नेटवर्क सुरक्षा की जांच करेंगी। खासतौर पर यह देखा जा रहा है कि कैमरे किस कंपनी के हैं, उनका सर्वर कहां स्थित है और डेटा किस प्रकार सुरक्षित रखा जा रहा है। यदि किसी कैमरे में सुरक्षा मानकों की कमी पाई जाती है, तो उसे तुरंत हटाने या अपग्रेड करने के निर्देश दिए जाएंगे।

शहर का 2016 में हुआ था टेंडर

रोहतक में नगर निगम ने हाउस की मीटिंग में कैमरे लगाने का प्रस्ताव पास कर सरकार को भेजा था। सरकार की मंजूरी के बाद वर्ष 2016 में करीब 2.32 करोड़ रुपये की लागत से शहर के 175 से अधिक स्थानों पर सीसीटीवी कैमरे लगाए गए थे। इसके बाद दूसरे चरण में भी बाजारों में करीब 75 कैमरे लगाए गए। जिसके बाद पूरे शहर को कैमरों के सुरक्षित कर लिया गया। जिन कैमरों को लगाया गया है वे हाई रेज्यूलेशन के कैमरे हैं। इनमें किसी भी जगह की तस्वीर दूर तक साफ दिखाई देती है। इसके अलावा इन कैमरों को इंटरनेट से जोड़ा गया है और यह आईपी बेस्ड हैं। आईपी एड्रेस की जानकारी केवल अधिकारियों के पास ही है। किसी भी आपराधिक वारदात या दुर्घटनाओं की जांच में यह कैमरे अहम सबूत साबित हो रहे हैं। इन कैमरों का उद्देश्य ट्रैफिक प्रबंधन और अपराध नियंत्रण था, लेकिन अब उनकी सुरक्षा और तकनीकी विश्वसनीयता की जांच की जा रही है। प्रशासन यह सुनिश्चित करना चाहता है कि पुराने सिस्टम में कोई खामी न हो, जिससे डेटा लीक या जासूसी की आशंका पैदा हो। विशेषज्ञों के अनुसार, आज के डिजिटल युग में सीसीटीवी कैमरे केवल निगरानी का साधन नहीं रह गए हैं, बल्कि यह संवेदनशील डेटा का बड़ा स्रोत भी बन चुके हैं।

इन प्रमुख जगहों पर लगाए गए कैमरे

शहर में अधिकतर बाजारों और सड़कों पर कैमरे लगाए गए हैं। दिल्ली बाईपास, सुखपुरा चौक, एमडीयू के सामने, पावर हाउस चौक, मेडिकल मोड, अशोका चौक, सुभाष चौक, सोनीपत स्टैंड, आंबेडकर चौक, छोटूराम चौक, शांतमई चौक, भिवानी स्टैंड, हिसार बाईपास, शीला बाईपास, कोर्ट चौक, किला रोड बाजार, शौरी मार्केट, झज्जर रोड मार्केट, गांधी कैंप बाजार आदि जगहों पर कैमरे लगाए गए हैं। इन कैमरों के माध्यम से ट्रैफिक व्यवस्था, भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों और संवेदनशील स्थानों पर लगातार निगरानी रखी जा रही है।

सुरक्षा सेटिंग्स जांचे आमजन

आम नागरिक भी वे अपने घरों और दुकानों में लगे कैमरों की सुरक्षा सेटिंग्स की जांच करें, मजबूत पासवर्ड का उपयोग करें और केवल विश्वसनीय कंपनियों के उपकरण ही लगवाएं। साथ ही, किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना तुरंत पुलिस को देने के लिए कहा गया है।

आईपी-एचडी ज्यादा बिक रहे

सीसीटीवी कैमरे लगाने वाले एक दुकानदार ने बताया कि इस समय बाजार में आईपी और एचडी कैमरे ज्यादा बिक रहे हैं। इसके अलावा कुछ लोग 4जी कैमरे भी खरीद रहे हैं लेकिन उसकी गुणवत्ता आईपी और एचडी से कम होती है। कुछ कैमरे सीडीआर के माध्यम से संचालित होते हैं तो कुछ कैमरे सीधे वाईफाई से चल सकते हैं।

1.45 लाख की ठगी करने का आरोपी धरा

■ आरोपी ने फर्जी फर्म और दस्तावेज दिखाकर विश्वास जीता

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

साइबर सेल की टीम ने व्हाट्सऐप के माध्यम से नौकरी दिलाने के नाम पर की गई 1 लाख 45 हजार रुपये की धोखाधड़ी के मामले का खुलासा करते हुए गिरोह में शामिल एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी को अदालत में पेश कर आगे की कार्रवाई की जा रही है। थाना साइबर प्रभारी निरीक्षक बाबूराम ने बताया कि सेक्टर-36 लाढोत रोड निवासी हर्ष बल्हारा की शिकायत पर मामला दर्ज कर जांच शुरू की गई। जांच में सामने आया कि 10 मार्च को हर्ष के पास व्हाट्सऐप कॉल आई, जिसमें खुद को रेनु जायसवाल बताने वाली युवती ने मर्चेंट नेवी में प्लेसमेंट का झांसा दिया। उसने अपनी फर्म का नाम अर्बन मरीन मार्किट बताया और हर्ष से सभी दस्तावेज मंगवा लिए। इसके बाद आरोपी ने जामनगर (गुजरात) में जॉइनिंग के फर्जी दस्तावेज भेजकर विश्वास जीत लिया और यूपीआई के माध्यम से कुल 1.45 लाख रुपये ठग लिए। शिकायत के बाद साइबर टीम ने तकनीकी जांच शुरू की। मामले की जांच मुख्य सिपाही जयप्रकाश द्वारा की गई। जांच के दौरान 17 अप्रैल को रियान पुत्र इरफान निवासी उत्तर प्रदेश को गिरफ्तार किया गया। पूछताछ में सामने आया कि आरोपी अपनी सिम कार्ड को कमीशन पर अन्य लोगों को इस्तेमाल के लिए देता था, जिससे इस तरह की धोखाधड़ी को अंजाम दिया जाता था। इस संबंध में थाना साइबर क्राइम में 25 मार्च को मामला दर्ज किया गया है।

चोरी का मामला सुलझा, आरोपी गिरफ्तार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

खेत में काम के दौरान 60 हजार रुपये चोरी होने का मामला

पुलिस की टीम ने पैसे चोरी की वारदात को सुलझाते हुए मामले में शामिल आरोपी को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। आरोपी को अदालत में पेश किया गया है तथा मामले की गहनता से जांच जारी है। प्रभारी थाना महम निरीक्षक रविंद्र कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि अजायब निवासी उमेद सिंह की शिकायत के आधार पर मामला दर्ज कर जांच शुरू की गई। प्रारंभिक जांच में सामने आया कि 15 अप्रैल को उमेद सिंह महम-सिसर रोड स्थित अरुण के खेत में कार्य कर रहा था। अरुण द्वारा उसे सुबह 60 हजार रुपये दिए गए थे, लेकिन शाम के समय रुपये गायब पाए गए। मामले की जांच उप निरीक्षक सुरेश के नेतृत्व में की गई। जांच के दौरान 17 अप्रैल को आरोपी मोनू पुत्र लालाराम निवासी गांव सिसर खास को गिरफ्तार किया गया। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से चोरी की गई पूरी राशि बरामद कर ली है। गिरफ्तार आरोपी की पहचान मोनू पुत्र लालाराम निवासी गांव सिसर खास के रूप में हुई है। इस संबंध में थाना महम में केस दर्ज करके जांच शुरू की गई थी।

प्राचीन संस्कारों एवं आधुनिक शिक्षा का उत्तम समन्वय
GURUKUL VISHWABHARTI
GOHANA BYPASS, BHAIYAPUR LADHOT ROAD, ROHTAK | M. 9466436220, 9817704401
GURUKUL HIGH SCHOOL
Affiliated to CBSE, English Medium Residential School | Affliliation No. 531114

GURUKUL ONLY FOR BOYS
CLASS 10TH RESULT 2025-26

Achievements & Silent Features
- Excellent Board Result
- Special Attention for NDA, IIT, NEET
- Special Focus on Moral Values
- Lush Green Play Ground & Eco Friendly Environment
- We provide top-level coaching facilities for all sports, delivering excellent performance and outstanding results.
- CCTV Surveillance 24x7
- Calligraphy writing classes to improve hand writing
- Excellent results of NTSE EXAM (Hindu Shiksha Samiti) in all subjects
- Glorious performance in SOF Olympiad in all subjects

MANISH 95%
NAVJEET 93% | KRISHNA 91% | BHUMIK 88% | SHANTANU 88%
ANKIT 87% | MANISH KUMAR 87% | AARAV RAJ 86% | RABI SHANKAR 85%

आचार्य हरिदत्त जी (संस्थापक एवं संचालक) - 9416629972
श्री नंदलाल शास्त्री (मुख्याधिष्ठाता) - 8901140225
आचार्य नंदकिशोर जी (निदेशक) - 9466436220
श्री संजय कौशिक (प्रधानाचार्य) - 9817704401
E-mail : gurukulbhaiyapur@yahoo.com I Website: www.gurukulvishwabharti.com

गेहूं कटाई के बाद पराग कणों से अस्पतालों में बढ़ी ओपीडी

मौसम में बदलाव पड़ रहा भारी सांस और फ्लू के मरीज बढ़ रहे

- डॉक्टरों का कहना है कि पहले ठीक हो चुके मरीज दोबारा पड़ रहे बीमार
- फिर से शुरू करना पड़ रहा उपचार

> अस्थमा के मरीजों के लिए यह समय और भी खतरनाक साबित हो रहा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रोहतक

जिले में मौसम में हो रहे बदलाव की वजह से सांस से जुड़ी बीमारियों के मरीजों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। खासतौर पर गेहूं की कटाई के बाद हवा में बढ़े पराग कण लोगों के स्वास्थ्य पर असर डाल रहे हैं। स्थिति यह है कि रोजाना 50 से अधिक मरीज पीजीआईएमएस में सांस लेने में तकलीफ, एलर्जी और अस्थमा जैसी समस्याओं को लेकर पहुंच रहे हैं। डॉक्टरों का कहना है कि पहले ठीक हो चुके मरीज भी दोबारा बीमार पड़ रहे हैं, जो चिंता का विषय है। अब उनकी दवा दोबारा शुरू करनी पड़ रही हैं। चिकित्सकों के अनुसार, मार्च और अप्रैल में गेहूं की फसल कटने के बाद खेतों में बचे अवशेष और उड़ते पराग कण हवा में मिलकर प्रदूषण का स्तर बढ़ा देते हैं। इसके अलावा तेज हवा और आंधी भी चल रही है, जिससे मौसम बार-बार बदल रहा है। हवा जब लोगों के संपर्क में आती है तो उनके श्वसन तंत्र पर सीधा असर डालती है। इससे एलर्जी, खांसी, जुकाम, गले में खराश और सांस फूलने जैसी समस्याएं बढ़ रही हैं। अस्थमा के मरीजों के लिए यह समय और भी खतरनाक साबित हो रहा है।

विशेषज्ञ से लें परामर्श

डॉक्टरों ने लोगों को सलाह दी है कि यदि हल्की खांसी या जुकाम भी हो तो उसे नजरअंदाज न करें और तुरंत विशेषज्ञ से परामर्श लें। खुद से मेडिकल स्टोर से दवा लेना स्थिति को और बिगाड़ सकता है। कई मामलों में गलत दवा लेने से एलर्जी बढ़ जाती है और संक्रमण गंभीर रूप ले सकता है। सिर्फ सांस के मरीज ही नहीं, बल्कि त्वचा और आंखों से संबंधित समस्याएं भी बढ़ रही हैं। अस्पतालों में रोजाना 40 से अधिक मरीज खुजली, लाल चकत्ते, आंखों में जलन और पानी आने की शिकायत लेकर पहुंच रहे हैं।

त्वचा और आंखों में भी हो रही दिक्कत

पराग कणों के हवा में आने की वजह से सांस के मरीज बढ़ रहे हैं। पहले से बीमार रहे लोग, जो उपचार से ठीक हो गए थे, वह भी दोबारा बीमार पड़ रहे हैं। जुकाम, खांसी और सांस की समस्या लेकर लोग ओपीडी में पहुंच रहे हैं। आए दिन 50 से अधिक मरीज आ रहे हैं। इसके अलावा त्वचा और आंखों में भी पराग कणों की वजह से समस्या आ रही है।
-डॉ राजेश गुप्ता, प्रोफेसर, श्वास रोग विभाग, पीजीआईएमएस

मास्क का उपयोग करें और चश्मा जरूर पहनें

बचाव के लिए चिकित्सकों ने कुछ सावधानियां बरतने की सलाह दी है। बाहर निकलते समय मास्क का उपयोग करें, आंखों को धूल से बचाने के लिए चश्मा पहनें और घर लौटने के बाद हाथ-मुंह अच्छी तरह धोएं। इसके अलावा, घर के अंदर साफ-सफाई बनाए रखना भी जरूरी है ताकि धूल और एलर्जी फैलाने वाले कण जमा न हो सकें।

बच्चों और बुजुर्गों को बरतनी होगी अधिक सावधानी

स्वास्थ्य विभाग ने भी लोगों से सतर्क रहने की अपील की है। खासतौर पर बच्चों, बुजुर्गों और पहले से बीमार लोगों को अतिरिक्त सावधानी बरतने की जरूरत है। समय पर इलाज और सही जानकारी ही इन बढ़ती बीमारियों से बचाव का सबसे प्रभावी तरीका है।

मेरा शहर मेरी समस्या — पाडा मोहल्ला

गंदगी और बदबू के बीच कैसे पूरी होंगी रस्में

शादी से पहले सीवर ओवरफ्लो, परिवार परेशान, पाडा मोहल्ले में हालात बदहाल

> शादी वाले घर के बाहर तो हालात और भी ज्यादा खराब
>
> समाधान की उम्मीद लगाए बैठै हैं लोग

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रोहतक

पाडा मोहल्ले में एक परिवार की खुशियां उस समय चिंता में बदल गईं, जब घर के बाहर पिछले कई दिनों से सीवर ओवरफ्लो की समस्या लगातार बनी हुई है। स्थिति यह है कि घर में चार दिन बाद शादी है, लेकिन गली में फैली गंदगी और बदबू के कारण परिवार के सामने बड़ा संकट खड़ा हो गया है। बार-बार शिकायत करने के बावजूद समस्या का समाधान नहीं हो पाया है, जिससे लोगों में निगम के प्रति रोष बढ़ता जा रहा है। स्थानीय लोगों का कहना है कि पिछले कई दिनों से सीवर जाम है और गंदा पानी सड़क पर बह रहा है। इससे न केवल आने-जाने में दिक्कत हो रही है, बल्कि आसपास के घरों में भी बदबू फैल रही है। शादी वाले घर के बाहर तो हालात और भी खराब हैं, जहां मेहमानों के आने-जाने की व्यवस्था करना मुश्किल हो गया है। लोगों का आरोप है कि जनस्वास्थ्य विभाग की लापरवाही के कारण यह समस्या लगातार बनी हुई है। यदि समय रहते सीवर की सफाई और मरम्मत कर दी जाती, तो आज यह स्थिति नहीं बनती। अब देखना यह है कि निगम इस गंभीर समस्या को कितनी जल्दी दूर करता है, ताकि शादी वाले परिवार को राहत मिल सके और मोहल्ले के लोग गंदगी और बदबू से निजात पा सकें। फिलहाल, पाडा मोहल्ले के लोग जल्द समाधान की उम्मीद लगाए बैठे हैं।

बढ़ता है आर्थिक बोझ

विभाग समय-समय पर यहां सीवरों की सफाई कर दे तो परेशानी ही न हो। लेकिन यहा सफाई ही नहीं की जा रही है। बहुत बार प्राइवेट सफाईकर्मियों से यहां की सफाई करवानी पड़ती है। जिससे आर्थिक बोझ भी बढ़ता है। -पवन कुमार

घर में बैठना मुश्किल

यह समस्या नई नहीं है, हर कुछ दिनों में सीवर ओवरफ्लो हो जाता है। बदबू इतनी ज्यादा होती है कि घरों में बैठना मुश्किल हो जाता है। बच्चों और बुजुर्गों को भी परेशानी हो रही है, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हो रही। -राजकुमार

सिर्फ आश्वासन ही मिला

हमने कई बार अधिकारियों को फोन किया और शिकायत दर्ज करवाई, लेकिन सिर्फ आश्वासन ही मिला। कोई कर्मचारी मौके पर नहीं पहुंचता। अब शादी का समय है, फिर भी समस्या जस की तस बनी हुई है। -मुकेश कुमार

मेरा शहर, मेरी समस्या कॉलम के जरिये आप भी रखें अपनी बात। अगर सेक्टर, गली-मोहल्ला, वार्ड, गांव और आसपास हैं समस्याओं से परेशान तो इस नंबर 9253681012 पर करें व्हाट्सएप। हम उठाएंगे आपका मुद्दा।

खबर संक्षेप

18वीं इंटर स्कूल जिला जंप रोप चैंपियनशिप 25 को

रोहतक। हरियाणा जंप रोप संघ के तत्वावधान में 18वीं इंटर स्कूल जिला जंप रोप प्रतियोगिता का आयोजन 25 अप्रैल 2026 को जैन पब्लिक स्कूल माता दरवाजा जींद रोड रोहतक में किया जाएगा। संघ के संस्थापक वीर सिंह आर्य ने बताया कि प्रतियोगिता में जिले के लगभग 22 स्कूलों के 250 खिलाड़ी भाग लेंगे। प्रतियोगिता का शुभारंभ संस्था के प्रधान रवि जैन व महासचिव मनीष जैन, डॉ दीपक भारद्वाज ओर स्कूल प्रिंसिपल आशा द्वारा किया जाएगा।

युवक को अवैध हथियार सहित किया गिरफ्तार

रोहतक। पुलिस की सीआईए-1 स्टाफ टीम ने गश्त के दौरान युवक को अवैध हथियार सहित गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। आरोपी के कब्जे से पिस्तौल और दो जिंदा राउंड बरामद किए गए हैं। सीआईए-1 प्रभारी निरीक्षक कुलदीप ने बताया कि 17 अप्रैल को उप निरीक्षक प्रवीन के नेतृत्व में पुलिस टीम रोहतक-हिसार रोड पर गद्दी खेड़ी के पास गश्त कर रही थी। सूचना के आधार पर ताजा माजरा स्थित शिव मंदिर के पास संदिग्ध युवक को काबू किया गया। युवक की पहचान आशीष निवासी ताजा माजरा के रूप में हुई। तलाशी लेने पर उसके पास से अवैध पिस्तौल और दो राउंड बरामद हुए।

रोहतक। रोडवेज भवन में निर्विरोध चयन हुए नए पदाधिकारी शपथ लेते हुए।

कुलदीप शर्मा प्रदेश अध्यक्ष व वीरेन्द्र सिंह चेयरमैन बने

> आबकारी एवं कराधान एसोसिएशन के त्रिवार्षिक चुनाव संपन्न

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रोहतक

हरियाणा कर्मचारी महासंघ से संबद्ध आबकारी एवं कराधान एसोसिएशन का त्रिवार्षिक चुनाव शनिवार को रोहतक स्थित रोडवेज भवन में सर्वसम्मति से संपन्न हुआ। इस बैठक में प्रदेश के 14 जिलों के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया, जिसमें संगठन के छह शीर्ष पदों पर पदाधिकारियों का निर्विरोध चयन किया गया। चुनाव अधिकारी वीरेन्द्र सिंह धनखड़ और दिलबाग सिंह अहलावत की देखरेख में वीरेन्द्र सिंह काजल को चेयरमैन और कुलदीप शर्मा को प्रदेश अध्यक्ष चुना गया।

अश्विनी मलिक को वरिष्ठ उपाध्यक्ष की जिम्मेदारी

इसके अलावा अश्विनी मलिक (वरिष्ठ उपाध्यक्ष), राजेश ढुल (महासचिव), जितेन्द्र कुमार (मुख्य संगठन सचिव) और आनन्द कुमार को कोषाध्यक्ष की जिम्मेदारी सौंपी गई। नवनियुक्त पदाधिकारियों को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई गई। पदभार संभालते ही प्रदेश अध्यक्ष कुलदीप शर्मा ने सरकार के प्रति कड़ा रुख अपनाया। उन्होंने कहा कि आबकारी एवं कराधान विभाग राजस्व में मुख्य भूमिका निभाता है, फिर भी सरकार कर्मचारियों की मांगों की अनदेखी कर रही है। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि जल्द ही वार्ता के जरिए समाधान नहीं निकाला गया, तो प्रदेश स्तर पर चरणबद्ध आंदोलन शुरू किया जाएगा। इस अवसर पर बजरंग लाल जांगड़ा, वेदपाल सिंह और राजेंद्र नांदल सहित कई वरिष्ठ कर्मचारी नेता मौजूद रहे।

विद्यार्थियों को समझाई पर्यावरण संतुलन की बारीकियां

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रोहतक

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय के बी.एससी. प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों के लिए हाल ही में एसएस बाग का एक दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण आयोजित किया गया। इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को व्यावहारिक ज्ञान से जोड़ना और प्रकृति के प्रति जागरूक करना था। यह भ्रमण वनस्पति विज्ञान विभाग की अध्यक्षा डॉ. वीना सचदेवा के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ।

इस दौरान विद्यार्थियों ने मियावाकी फॉरेस्ट तकनीक, आधुनिक कृषि पद्धतियों और औषधीय पौधों का बारीकी से अवलोकन किया। डॉ. वीना सचदेवा, डॉ. सिंकी शर्मा और अन्य प्राध्यापकों ने विद्यार्थियों को पर्यावरण संतुलन और वनस्पति संरक्षण की बारीकियां समझाईं। इस अवसर पर महाविद्यालय परिवार राजेश जैन (एम.डी.,एलपीएस का विशेष धन्यवाद ज्ञापित किया, जिन्होंने न केवल एक उत्कृष्ट ऑर्गेनिक फार्म का विकास किया है, बल्कि आम जनमानस में जलवायु परिवर्तन, ऑर्गेनिक खेती, "मेहक" पहल तथा वृक्षारोपण अभियानों के प्रति जागरूकता फैलाने में भी सराहनीय योगदान दिया है। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शमशेर हुड्डा ने इस सफल आयोजन के लिए पूरी टीम और विद्यार्थियों को बधाई दी। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में व्यावहारिक अनुभव के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि पुस्तकीय ज्ञान को जब हम धरातल पर देखते हैं, तो वह बेहतर ढंग से समझ आता है। भविष्य में भी विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए इस तरह के और अधिक शैक्षणिक भ्रमण आयोजित किए जाएंगे। विद्यार्थियों के लिए यह यात्रा न केवल ज्ञानवर्धक रही, बल्कि इसने उन्हें प्रकृति के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझने का अवसर भी प्रदान किया। सभी छात्र-छात्राओं ने इस अनुभव को प्रेरणादायक बताया।

रोहतक। कार्यक्रम में छात्राओं के साथ प्राचार्य डॉ. शमशेर हुड्डा। *फोटो : हरिभूमि*

मुख्य बाजारों एवं सड़कों पर रात को भी करवाई जा रही सफाई, कन्हेली रोड पर चलाया विशेष अभियान

रोहतक। नगर निगम आयुक्त सचिन गुप्ता ने बताया कि शहर को स्वच्छ, सुंदर एवं स्वस्थ बनाए रखने के उद्देश्य से निगम द्वारा प्रतिदिन विशेष सफाई अभियान चलाए जा रहे है तथा कार्य योजना के तहत कार्य किया जा रहा है। शनिवार को निगम की टीम द्वारा कन्हेली रोड़ पर विशेष सफाई अभियान चलाकर सफाई करवाई गई। विशेष अभियान नगर निगम अधिकारियो की उपस्थिति में चलाया गया तथा वहां पर सफाई कार्य के साथ-साथ सड़क के साथ से कूड़ा उठाया गया। सफाई कार्य को नगर निगम द्वारा गंभीरत से लिया जा रहा है तथा मुख्य बाजारों, मुख्य मार्गो की रात के समय भी नियमित रूप से सफाई कार्य कराया जा रहा है ताकि सुबह के समय शहर स्वच्छ दिखाई दे, जिससे नागरिकों एवं व्यापारियों को आवागमन में भी सुविधा मिलती है। नगर निगम द्वारा मुख्य बाजारो से रात के समय भी कूड़ा एकत्रित किया जा रहा है तथा गंदगी के ढेर न लग सके। घर-घर से प्रतिदिन कूड़ा उठान का कार्य करवाया जा रहा तथा गांव सुनारियां स्थित नगर निगम, रोहतक के ठोस कचरा प्रबंधन संयंत्र का संचालन संबंधित एजेंसी के माध्यम से करवाया जा रहा है ताकि शहर से प्रतिदिन निकलने वाले कूड़े को वैज्ञानिक ढंग से ट्रीटमेंट, रीसाइकलिंग तथा प्रोसेसिंग हो सके।

कायम की मिशाल : मरने के बाद भी दूसरों को रोशनी दे गए अमरनाथ, किया नेत्रदान

रोहतक। स्वैच्छिक संस्थाओं और निरंकारी मिशन के सांझा सहयोग से मानवता की सेवा की एक और मिसाल पेश की गई है। चिनियट कॉलोनी निवासी अमरनाथ के निधन के उपरांत, उनके परिवार ने उनकी अंतिम इच्छा का सम्मान करते हुए नेत्रदान करने का निर्णय लिया। इस पुनीत कार्य से क्षेत्रीय नेत्र बैंक पंडित भगवत दयाल शर्मा यूनिवर्सिटी ऑफ हेल्थ साइंसेज को नेत्रदान प्राप्त हुआ। नेत्रदान की सूचना सनी निरंकारी ने पूर्व मुख्य नेत्र अधिकारी दिनेश शर्मा को दी। सूचना मिलते ही दिनेश शर्मा ने तुरंत आर.आई.ओ. इंचार्ज डॉ. आर. एस. चौहान से संपर्क साधा। डॉ. चौहान के निर्देश पर एक विशेष टीम का गठन कर उसे तुरंत वी केयर हॉस्पिटल भेजा गया, जहां टीम ने सम्मानपूर्वक नेत्र प्राप्त कर बैंक में सुरक्षित जमा करवाए। पूर्व मुख्य नेत्र अधिकारी दिनेश शर्मा ने बताया कि राजू बेरी, अमरनाथ बेरी, हेमंत निरंकारी और रिंकू निरंकारी जैसे समाजसेवी लंबे समय से नेत्रदान अभियान से जुड़े रहे हैं। अमरनाथ के परिवार ने न केवल अपने पूज्य पिताजी की इच्छा पूरी की, बल्कि समाज के सामने एक प्रेरणादायक उदाहरण भी रखा।

रोहतक। सनी को प्रशंसा पत्र सौंपकर सम्मानित करते पूर्व मुख्य नेत्र अधिकारी दिनेश शर्मा ,राजू बेरी, रिंकू निरंकारी व अन्य डॉक्टर।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, नजदीक इण्डस पब्लिक स्कूल, दिल्ली रोड, रोहतक ऑफिस नं.: 9253681019-20, फोन : 9253681010, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नही हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।

हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 × 8 सें.मी 10× 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2500/- रु. 3000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
सिटी कार्यालय :- हरिभूमि, कृषि विज्ञान केन्द्र के सामने, दिल्ली रोड, रोहतक फोन : 9996959400
मुख्य कार्यालय :- हरिभूमि, नजदीक इण्डस पब्लिक स्कूल, दिल्ली रोड, रोहतक फोन : 9253681019-20

सुविधा | पहले दिन पांच बसों ने एक-एक चक्कर लगाया

डीटीसी की नई एसी बसें पहुंची रोहतक यात्रियों को मिल रहा राहत भरा सफर

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रोहतक

दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी) की नई एसी बसों के रोहतक पहुंचने से यात्रियों को बड़ी राहत मिली है। लंबे समय से रोहतक से दिल्ली के बीच सीधी और किफायती एसी बस सेवा की कमी महसूस की जा रही थी, जिसे अब इन नई बसों के शुरू होने से काफी हद तक पूरा कर दिया गया है।

प्राइवेट बसों का लेना पड़ता था सहारा

पहले दिन इन पांचों बसों ने एक-एक चक्कर लगाया। हालांकि सेवा की शुरुआत सीमित स्तर पर हुई, लेकिन यात्रियों का उत्साह साफ देखने को मिला। बड़ी संख्या में लोगों ने इन बसों में सफर कर सुविधा का अनुभव लिया और इसे काफी आरामदायक बताया। यात्रियों का कहना है कि पहले दिल्ली जाने के लिए उन्हें या तो प्राइवेट वाहनों का सहारा लेना पड़ता था या लंबी दूरी की बसों में सफर करना पड़ता था, जहां अक्सर सीट मिलना मुश्किल होता था। अब डीटीसी की एसी बस सेवा शुरू होने से आम आदमी के लिए भी आरामदायक यात्रा का विकल्प उपलब्ध हो गया है। यात्रियों ने बताया कि बसों की सीटें आरामदायक हैं, अंदर का माहौल साफ-सुथरा है और सफर भी पहले के मुकाबले ज्यादा सहज महसूस हो रहा है।

रोहतक से पीरागढ़ी तक चल रही बसें

फिलहाल ये बसें दिल्ली के पीरागढ़ी तक चलाई जा रही हैं और इसके लिए यात्रियों से 75 रुपये किराया लिया जा रहा है, जो कि एसी सुविधा के हिसाब से किफायती माना जा रहा है। यात्रियों का मानना है कि यदि भविष्य में बसों की संख्या बढ़ाई जाए और चक्करों की संख्या में इजाफा किया जाए, तो और अधिक लोगों को इसका लाभ मिल सकेगा।

कामकाजी और छात्रों के लिए फायदेमंद

स्थानीय लोगों ने इस पहल का स्वागत करते हुए कहा कि यह सेवा रोजाना कामकाजी लोगों, छात्रों और दिल्ली आने-जाने वाले अन्य यात्रियों के लिए काफी फायदेमंद साबित होगी। साथ ही उन्होंने उम्मीद जताई कि आने वाले दिनों में बस सेवा का विस्तार किया जाएगा और अन्य रूटों पर भी इसी तरह की सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी।

महिला आरक्षण का विरोध कर कांग्रेस ने घटिया मानसिकता दिखाई : अरविंद

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सांपला

- नगरपालिका चुनाव कार्यालय का भाजपा नेता शर्मा ने किया उद्घाटन

नगरपालिका चुनाव कार्यालय के उद्घाटन के बाद आयोजित पत्रकार वार्ता में भाजपा के वरिष्ठ नेता एवं मंत्री अरविन्द शर्मा ने महिला आरक्षण के मुद्दे पर कांग्रेस पर तीखा हमला बोला। पत्रकारों के सवालों का जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि महिला आरक्षण का विरोध कर कांग्रेस ने अपनी संकीर्ण और घटिया मानसिकता का परिचय दिया है।

उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए निरंतर ठोस कदम उठा रही है, जबकि कांग्रेस ने हमेशा इस विषय पर केवल राजनीति की है। अरविन्द शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में महिला आरक्षण को लागू करने की दिशा में ऐतिहासिक पहल की गई है, जिससे देश की राजनीति में महिलाओं की भागीदारी और मजबूत होगी। इसके विपरीत, कांग्रेस का रुख महिलाओं के हितों के खिलाफ रहा है। इससे पूर्व उन्होंने पार्टी के चुनावी कार्यालय का उद्घाटन हवन में आहुति डाल कर की और कार्यकर्ताओं को एक जुट होकर काम कर बीजेपी को जिताने के प्रेरित किया। इस अवसर पर उनके साथ जिला अध्यक्ष रणबीर ढाका, रामावतार बाल्मीकि, दीपक हुड्डा, नितिन जैन, उदय भान मलिक, महामंडलेश्वर विद्या स्वरूप, कपिल खत्री, नवीन शर्मा, राजसिंह अम्बेडकर आदि मौजूद रहे।

केवल धरती पर ही जीवन संभव है, यह जानने के बावजूद जाने-अनजाने हम धरती को तरह-तरह से नुकसान पहुंचा रहे हैं। दुनिया भर के वैज्ञानिक मानते हैं कि सौरमंडल के सबसे खूबसूरत ग्रह धरती को बचाना किसी एक सरकार या संगठन का काम नहीं, बल्कि हम सबकी जिम्मेदारी है। हमें जागरूक होना होगा, बदलाव के छोटे-छोटे कदम उठाने होंगे, तभी आने वाली पीढ़ियों के लिए हम अपनी प्यारी धरती को सुरक्षित रख पाएंगे।

हम सब मिलकर बचाएं अपनी प्यारी धरती

आवरण कथा / रजनी अरोड़ा

धरती जीवन का आधार है, जो एक निःस्वार्थ मां की तरह मानव के लिए अनुकूल, सुंदर प्राकृतिक वातावरण ही प्रदान नहीं करती। उसकी मूलभूत जरूरतें (भोजन, पानी, हवा, वस्त्र, घर) भी मुहैया कराती है। विडंबना है कि मनुष्य अपने विकास और सुख-सुविधाएं पाने की अंधाधुंध दौड़ में जाने-अनजाने इसी धरती को सबसे अधिक नुकसान पहुंचा रहा है। दिनों-दिन बढ़ते मानव अतिक्रमण की वजह से जहां प्राकृतिक संसाधनों की निरंतर कमी का सामना करना पड़ रहा है, वहीं कई घरेलू-व्यावसायिक कार्य-कलाप वायुमंडल में कार्बन उत्सर्जन यानी कार्बन डाई-ऑक्साइड और अन्य ग्रीन हाउस गैसों का लेवल निरंतर बढ़ाने में जिम्मेदार हैं। नासा और इंटरगवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज (आईपीसीसी) की रिसर्च के अनुसार पिछले 150 वर्षों में धरती का औसत तापमान लगभग 1.2 डिग्री सेल्सियस बढ़ चुका है। इसका असर केवल प्रकृति पर ही नहीं, बल्कि खेती, पानी, मानव स्वास्थ्य और जीव-जंतुओं के जीवन पर भी पड़ रहा है। इन संकटों से अपनी धरती को बचाने के लिए हम सभी को अपने स्तर पर हर संभव प्रयास करने होंगे।

पर्यावरण की करें सुरक्षा

धरती को बचाने के लिए सबसे जरूरी है पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक होना, अच्छी आदतें अपनाना, बच्चों और दूसरों को भी प्रेरित करना। परिवार में ग्रीन रूल बनाएं और उन्हें अमल करने के लिए सजग रहें। पर्यावरण नीतियों को लेकर सचेत रहें। अपने इलाके में हरित नीतियां (पेड़ लगाने, कचरा प्रबंधन और सार्वजनिक परिवहन सुधार) लागू करवाने की मांग करें। पर्यावरण संगठनों से जुड़ें।

घर को बनाएं ग्रीन होम

घर में ऊर्जा की खपत, कार्बन उत्सर्जन का सबसे बड़ा कारण है। ऊर्जा संरक्षण के लिए जब जरूरत न हो तो कमरे की लाइट, पंखे बंद कर दें। इलेक्ट्रॉनिक उपकरण जब यूज न कर रहे हों तो स्विच ऑफ कर दें। स्टैंडबाय में भी बिजली खर्च होती है। दिन में प्राकृतिक रोशनी का अधिक उपयोग करें। साधारण बल्ब की तुलना में एलईडी बल्ब 75 प्रतिशत कम बिजली खर्च करता है और 10 गुना अधिक चलता है। यह छोटा बदलाव बिजली का बिल कम करता है और कार्बन उत्सर्जन भी। पुराने एसी, फ्रिज और वॉशिंग मशीन बहुत अधिक बिजली खर्च करते हैं। 5 स्टार रेटिंग वाले उपकरण खरीदें। इनसे 30-40 प्रतिशत बिजली बचती है। घर की छत पर सोलर पैनल लगवाना या किसी अक्षय ऊर्जा प्रदाता की मदद से बिजली लेना काफी कारगर है। यह वन-टाइम इंवेस्टमेंट है, जो आने वाले तकरीबन 25 साल तक मुफ्त बिजली देता है। सरकार इसमें सब्सिडी भी देती है। एसी को 24-25 डिग्री पर ही चलाएं। हर एक डिग्री कम करने पर 6 प्रतिशत अधिक बिजली खर्च होती है।

घर की एयर सीलिंग यानी दरवाजों और खिड़कियों की दरारें बंद करना, ऊर्जा बचत का सबसे किफायती तरीका है। इससे गर्मियों में ठंडक और सर्दियों में गर्माहट बनी रहती है और हीटिंग-कूलिंग का खर्च 15-30 प्रतिशत तक कम हो जाता है। घर में गैस या कोयले की जगह इलेक्ट्रिक हीट पंप लगाने से कार्बन फुटप्रिंट में 100 किलो कार्बन डाई-ऑक्साइड प्रति वर्ष की कमी आ सकती है। वॉशिंग मशीन हमेशा फुल लोड पर चलाएं। पानी का टेंपरेचर नॉर्मल रखें। पानी गर्म करने में एनर्जी की खपत 75-90 प्रतिशत बढ़ जाती है यानी बिजली का बिल बढ़ जाता है। इसी तरह कपड़े क्लॉथ-ड्रायर में सुखाने के बजाय बाहर धूप या खुली हवा में सुखाएं, क्योंकि वॉशिंग मशीन का क्लॉथ-ड्रायर घर में इस्तेमाल होने वाले इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों (जैसे- फ्रिज, टीवी, डिशवॉशर, एसी, लैपटॉप से कहीं ज्यादा बिजली खर्च करता है।

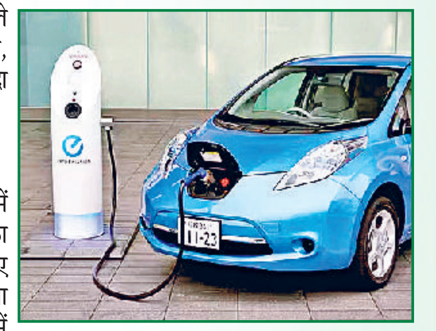

भोजन ना करें वेस्ट

दुनिया के कुल ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में लगभग 26 प्रतिशत भाग खाद्य उत्पादन का रहता है। इसलिए खाने को वेस्ट ना करें। दुनिया में उत्पादित खाने का एक-तिहाई हिस्सा बर्बाद होता है। यानी खाद्य पदार्थ उगाने में लगा पानी, बिजली और मेहनत, सब बेकार। ऐसे में जरूरत के अनुसार ही खाना बनाना चाहिए। अगर खाना बचता भी है तो उसे फेंकने के बजाय अगले मील में खा लें या जरूरतमंद को दे दें।

सिंगल-यूज प्लास्टिक है हार्मफुल

आज प्लास्टिक-प्रदूषण की समस्या बहुत गंभीर हो चुकी है। इससे बचने के लिए सिंगल-यूज प्लास्टिक की चीजों (पॉलिथीन, प्लास्टिक कप, स्ट्रॉ, बर्तन) का प्रयोग कम से कम करें। कपड़े का थैला, स्टील की बोतल और हर्बल टूथब्रश अपनाएं। पानी के लिए रियूज होने वाली बोतल का इस्तेमाल करें।

कार्यस्थल में रखें ध्यान

अपने कार्यस्थल पर भी छोटे-छोटे प्रयासों से धरती को संरक्षित करने में अपना सहयोग आप दे सकते हैं। एंवॉयर्नमेंट फ्रेंडली सामग्री, एलईडी लाइट, ऊर्जा बचाने वाले उपकरण और कचरे का उचित प्रबंधन वाले उपकरणों का यूज करें। कागज की जगह डिजिटल दस्तावेज उपयोग करें। प्रिंट करना जरूरी हो तो पेपर के दोनों तरफ प्रिंट करें। व्यावसायिक मुद्दों पर परिचर्चा करने के लिए वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग को बढ़ावा दें ताकि समय और ऊर्जा की बचत हो। ऑफिस जाने के लिए अकेले कार ड्राइव करके जाने के बजाय कारपूल की आदत डालें। यानी एक गाड़ी में 4 लोग जाएं तो कार्बन उत्सर्जन 75 प्रतिशत कम होता है। मेट्रो, बस, ट्रेन जैसे सार्वजनिक परिवहन में सफर करें। अगर नई गाड़ी खरीदनी हो तो इलेक्ट्रिक वाहन खरीदें। इसमें सब्सिडी भी मिलती है। इससे पेट्रोल-डीजल पर निर्भरता तो कम होगी ही, प्रदूषण भी कम होगा। कम दूरी के लिए साइकिल या पैदल चलने की आदत डालें। पर्यावरण के साथ-साथ स्वास्थ्य के लिए भी बेहतरीन है।

अधिक से अधिक पेड़ लगाएं

पेड़-पौधे धरती को खूबसूरत हरा-भरा ही नहीं बनाते, भूमि में कटाव कम कर मजबूती लाने, भूमि की उर्वरता बढ़ाने, पर्यावरण को प्रदूषण रहित रखने में भी मदद करते हैं। हमें जीवनदायी ऑक्सीजन देते हैं और अपने जीवनकाल में तकरीबन 1 टन कार्बन डाई-ऑक्साइड सोखते हैं। आप अपने जन्मदिन, शादी की सालगिरह या किसी भी खास मौके पर पेड़-पौधे लगाने की परंपरा शुरू कर सकते हैं। कॉरपोरेट ट्री प्लांटेशन ड्राइव में शामिल होकर विभिन्न प्रजाति के पेड़-पौधे लगाकर ऑफिस कंपाउंड में हरियाली बढ़ाएं। हमारे ऐसे प्रयासों से भी धरती पर हरियाली बढ़ेगी। *

जल संरक्षण भी है जरूरी

जलवायु परिवर्तन से पानी का संकट भी धरती पर बढ़ता जा रहा है। दुनिया के कई देशों समेत भारत के कुछ राज्यों में भी भूजल स्तर तेजी से गिर रहा है। जल संरक्षण के लिए भी हम कुछ प्रयास कर सकते हैं। जैसे-ब्रश करते समय नल बंद रखना, कम समय में नहाना और टपकते नलों को ठीक करवाना। ऐसी छोटी-छोटी आदतें मिलकर हजारों लीटर पानी बचा सकते हैं। घर की छत पर वर्षा जल संग्रह प्रणाली लगाएं। यह पानी बगीचे, गाड़ी धोने और फ्लश के लिए उपयोग हो सकता है। बाजार में ऐसे नल उपलब्ध हैं, जो 50 प्रतिशत तक कम पानी उपयोग करते हैं लेकिन दबाव उतना ही रहता है। इससे पानी की बचत होती है। दुनिया के समुद्रों, नदियों में बेशुमार प्लास्टिक जमा हो चुका है। धरती पर मौजूद जल को संरक्षित करने के लिए हमें सजग होना होगा।

विशेष: पृथ्वी दिवस
22 अप्रैल

केवल एक दिन ही नहीं रोज मनाएं पृथ्वी दिवस

विगत कई दशकों से हम जाने या अंजाने अपनी धरती को नुकसान पहुंचाते आ रहे हैं। आज धरती के अस्तित्व पर ही संकट मंडराने लगा है। ऐसे में अब यह हमारी ही जिम्मेदारी है कि पृथ्वी संरक्षण के लिए हर संभव प्रयास करें। हर वर्ष मनाया जाने वाला पृथ्वी दिवस, हम सबको यही संदेश देता है।

अवेयरनेस
लोकमित्र गौतम

धरती हम सभी के जीवन का आधार है। लेकिन विडंबना देखिए कि हम सब धरतीवासी इसे ही सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचा रहे हैं। ऐसे में हर साल 22 अप्रैल को मनाया जाने वाला पृथ्वी दिवस, केवल एक तारीख भर नहीं है बल्कि समूचे मानव समुदाय को एक चेतावनी और सामूहिक संकल्प का प्रतीक भी है।

इस दिन की महत्ता: पृथ्वी दिवस हमें याद दिलाता है कि विकास की अंधी दौड़ में हम अपनी जड़ों को ही नष्ट करते जा रहे हैं। बढ़ता प्रदूषण, घटते जंगल और दिनोंदिन डराता जलवायु परिवर्तन, ये सब संकेत हैं कि हमें अपनी सोच और पृथ्वी मां के साथ किए जाने वाले अपने व्यवहार को बदलने की जरूरत है। पृथ्वी दिवस हमें इस बात की भी प्रेरणा देता है कि हमारे छोटे-छोटे प्रयासों से बड़ी-बड़ी जिम्मेदारियां आसानी से निभ सकती हैं ताकि आने वाली पीढ़ियों को एक सुरक्षित पृथ्वी, एक स्वच्छ वातावरण और संतुलित पर्यावरण मिल सके।

पृथ्वी दिवस की शुरुआत: पृथ्वी दिवस की शुरुआत पिछली सदी में 1970 में हुई थी। इसके पीछे उस समय की वैश्विक स्थितियां जिम्मेदार हैं। सन् 1960 के दशक में अमेरिका सहित दुनिया के कई हिस्सों में औद्योगीकरण तेजी से बढ़ रहा था, लेकिन पर्यावरण संरक्षण पर कोई खास ध्यान नहीं दिया जा रहा था। नदियां प्रदूषित हो रही थीं, हवा दिन पर दिन जहरीली हो रही थी और जैव-विविधता लगातार खतरे में थी। इसी सबको देखते हुए अमेरिकी सीनेटर गेलॉर्ड नेल्सन ने पर्यावरण के प्रति जन-जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से 22 अप्रैल 1970 को पृथ्वी दिवस का आयोजन किया। इस दिन करीब 2 करोड़ लोग सड़कों पर उतरे और पर्यावरण संरक्षण की मांग की। यह एक ऐतिहासिक जन-आंदोलन बन गया। इसके बाद धीरे-धीरे यह विभिन्न वैश्विक अभियानों में बदल गया और आज दुनिया भर के 190 से ज्यादा देश पृथ्वी दिवस मनाते हैं।

अधिक प्रासंगिक है आज: पृथ्वी दिवस की प्रासंगिकता, इसके शुरू किए जाने के समय से कहीं ज्यादा आज है। हम जिन समस्याओं विशेषकर पर्यावरणीय समस्याओं का आज सामना कर रहे हैं, इससे पहले ये कभी इस कदर भयानक नहीं थीं। बढ़ते तापमान, पिघलते ग्लेशियर आज जलवायु परिवर्तन का सबसे बड़ा कारण हैं। दिल्ली जैसे शहरों की हवा प्रदूषण के कारण इस कदर जहरीली है कि दुनिया के कई स्वास्थ्य संगठन कह चुके हैं कि दिल्ली में पूरी जिंदगी गुजारने का मतलब है, अपनी जिंदगी के 10 साल कम कर लेना। लगभग यही हाल जल संकट के मामले में भी है। किसी एक देश में नहीं बल्कि पूरी दुनिया आज जल संकट से गुजर रही है। अगर बात वनों के विनाश या जैव-विविधता के नुकसान की करें तो जितना कहें, वह कम होगा। तमाम चेतावनियों और वैज्ञानिक अध्ययनों से निकले निष्कर्षों के बावजूद हर साल दुनिया से लाखों हेक्टेयर जंगल खत्म हो रहे हैं। यह गंभीर चिंता का विषय है।

वैश्विक है संकट: पृथ्वी में हर तरीके के सकारात्मक वातावरण के क्षरण का यह संकट किसी एक देश का संकट नहीं है, दुनिया के हर हिस्से में यही हो रहा है। अपवाद के तौर पर अगर कुछ देश इस विनाश के हिस्सेदार नहीं हैं, तो दूसरों के कारण उन्हें इसकी सजा भुगतनी पड़ रही है। जहां तक अपने देश भारत का सवाल है, तो हमारे यहां तेजी से बढ़ते शहरीकरण के कारण पर्यावरण पर बहुत गहरा दबाव है। खेती में रासायनिक उर्वरकों की अधिकता और लगातार मिट्टी के अनुर्वरक होते जाने के कारण फसलों का खाद पर ज्यादा से ज्यादा निर्भर होते जाना, जहां चाहकर भी मृदा प्रदूषण से हम बच नहीं सकते, वहीं नदियों का प्रदूषण भी दिनोंदिन गहराता जा रहा है। हालांकि हाल के दिनों में हमारे देश में कई सकारात्मक पहलें भी देखने को मिली हैं। मसलन सौर ऊर्जा मिशन के बढ़ते कदम, प्लास्टिक प्रतिबंध के आधे-अधूरे ही सही पर लगातार बार-बार चलाए जाने वाले अभियान, किचन गार्डेनिंग और ऑर्गेनिक खेती के हो रहे प्रयास, ये दिखाते हैं कि अगर इच्छाशक्ति हो तो धरती को बर्बाद होने से हम सब सामूहिक प्रयासों से बचा सकते हैं।

छोटे कदम भी हैं महत्वपूर्ण: पृथ्वी दिवस की सार्थकता तभी होगी, जब हर आदमी आगे बढ़कर इसके संरक्षण में अपना योगदान देगा। अगर हम लोग संकल्प ले लें कि रोजमर्रा की जिंदगी में प्लास्टिक का उपयोग नहीं करेंगे, पानी, बिजली की अंधाधुंध बर्बादी नहीं करेंगे, पेड़ लगाएंगे और लगे हुए पेड़ों की देखभाल करेंगे, तो इतना भर करने से ही पृथ्वी के सामने जो समस्याएं मुंह बाए खड़ी हैं, इनमें से आधी खत्म हो जाएंगी और अगर सरकार, विभिन्न संस्थाएं और समाज इसके विरुद्ध उठ खड़ा हो तब तो तमाम परेशानियों से मुक्त हो सकते हैं। *

कविता
घमंडीलाल अग्रवाल

मेरा गांव

मिट्टी में मुक्तक मिलते हैं
गलियों-गलियों गीत,
गाय-भैंस के रंभाने में
कविता और अगीत।
छप्पर ऊपर की खपरैलें
अर्पण करती लेख,
टेढ़ी पगडंडियां खींचती
उपन्यास की रेख।
जन-जन की बोली उपजाती
मधुर हास्य की गंध,
पहनावों में पहेलियों के
कई संकलन बंद।
नूतन प्रेमकथा देने की
पनघट ने ली ठान,
शेर, गजल, गीतिका लुटाती
अधरों की मुस्कान।
यहां रहट की ध्वनियां देतीं
एकांकी के भाव,
लेखक, कथाकार, कवि, शायर
लोगो, मेरा गांव।

व्यंग्य / पूरन सरमा

बस हो या रेल सब में दुर्जन यात्रा कर रहे हैं, वे आएंगे और आपकी सज्जनता का लाभ उठाकर आपकी सीट हथिया लेंगे। आप खड़े-खड़े परेशान होते रहेंगे और दूसरा सहयात्री पूरी सीट पर पांव फैलाकर बैठा रहेगा।

त्याग दीजिए नैतिकता

हालांकि आप अब तक नैतिकता का त्याग कर ही चुके होंगे, लेकिन यदि नहीं किया है तो नेक सलाह मानकर इसे अविलंब त्यागिए। इसमें बंधे रहना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है। त्याग और बलिदान का युग नहीं है यह। यह युग घोर स्वार्थ-परकता, अन्याय, छल, कपट तथा प्रपंच का है। आपने थोड़ी-सी भी शालीनता बरती कि गए काम से। नैतिकता से आदमी में निष्ठा, लगन व मेहनत के भाव जन्म लेते हैं और ये भाव अब गिर चुके हैं। इन भावों को अपनाने से आदमी का पतन होता है तथा लोककल्याण की चक्की में पिसकर नष्ट हो जाता है। श्रद्धा, आदर्श, परोपकार एवं ईमानदारी जैसे शब्द अब महत्त्व खो चुके हैं। इनके अर्थ समझने की कोशिश मत करिए। वैसे तो शब्दकोषों के जो नए संस्करण आएंगे, उनमें आपको ये शब्द ही नहीं मिलेंगे। इसलिए नैतिकता को त्यागिए और स्वार्थ की अंधी दौड़ में शरीक हो जाइए, तब तो आपकी नैया इस भवसागर से पार हो जाएगी, अन्यथा इसी में डुबकी लगाते रहेंगे।

दफ्तर में जिस व्यक्ति के पास जरा-सी भी नैतिकता है, बस वही तकलीफ पा रहा है। वर्ना दूसरे तमाम लोग बाहर गुमटियों पर चाय-समोसे उड़ा रहे हैं, पान की पीकें उगल रहे हैं। आपने ही कौन-सा च्यवनप्राश खाया है, जो सारा कौशल दिखाकर पूरे दफ्तर के कार्य को निपटाना चाहते हैं। काम मत कीजिए, बस बात कीजिए। वेतन काम करने का नहीं, ऑफिस में हाजिरी लगाने का मिलता है, वह आप कर ही देते होंगे। काम करने के लिए घूस, रिश्वत तथा भेंट आदि का चलन है। भ्रष्टाचार किसलिए फैलाया गया है? बस इनका लाभ उठाइए। यह लाभ उठाने के लिए होता है, त्यागने के लिए नहीं। वेतन तो उन लोगों को भी यथासमय मिल रहा है, जो काम नहीं करते, फिर आपको कौन-सा हार्ड ड्यूटी एलाउंस मिल रहा है। यह आपकी नैतिकता ही तो है, जो आपको चैन नहीं लेने देती। नैतिकता बड़ी खराब है, जिसमें एक बार घुस जाए, निकलने का नाम ही नहीं लेती है। मेरी तमाम सज्जनों से अपील है कि वे आपनी सज्जनता को त्यागें। युग बड़ा खराब है, सब घात लगाए बैठे हैं। आपको गच्चा देने की फिराक में है दुनिया। दुर्जनता को अपनाइए, आपकी सारी समस्याएं हल हो जाएंगी। समस्याओं के पहाड़ तैयार करने हैं तो सज्जन बने रहिए। यकीन न हो तो अभी आप सज्जनता के पक्ष में जनमत संग्रह करवाकर देखिए, आप अकेले रह जाएंगे। अगर यह सोचते होंगे कि यूनियन बना लेंगे, तो यह भी दिवास्वप्न है। वैसे यूनियनबाजी सज्जन आदमी कर भी नहीं सकता। इसके लिए भी आपको घाट-घाट का पानी पीने के बाद सज्जनता का पाजामा हर हालत में उतार कर फेंकना होगा। जो आदमी युग की नब्ज नहीं पहचानता, वह पछताता है। यदि आप पछताने का चाव रखते हैं तो जरूर, नैतिकता को अपनाए रहें।

सज्जनता आपके भीतर होगी तो आप पब्लिक ट्रांसपोर्ट में कोई भी यात्रा आराम से नहीं कर सकेंगे। यात्रा के दौरान आपके पास जब भी कोई महिला आएगी तो खड़े होकर आप उसे बैठने को स्थान दे देंगे। अब आप खड़े रहिए, घंटे-दो घंटे। बस हो या रेल सब में दुर्जन यात्रा कर रहे हैं, वे आएंगे और किसी न किसी तरह आपकी सज्जनता का लाभ उठाकर आपकी सीट हथिया लेंगे। आप में शालीनता, विनम्रता और सदाशयता कूट-कूट कर जो भरी है, उसी का परिणाम है कि आप खड़े-खड़े परेशान होते रहेंगे और दूसरा सहयात्री पूरी सीट पर पांव फैलाकर बैठा रहेगा। आपकी हिम्मत नहीं होगी कि आप उससे यह कह दें कि वे अपने पांव समेट लें। काश, इस समय आपके पास दुर्जनता होती, लफंगई होती तो आपको सीट मिल जाती। शिष्टाचार इस युग की घोर बुराई है। आप बुराई अपनाते हैं तो यह मूर्खता नहीं तो और क्या है?

मेरी तो यही सलाह है कि आप में जो भी उच्च संस्कार बतौर इंसानियत के पैदा हो गए हैं, उन्हें अपने वैयक्तिक जीवन के हित संरक्षण के लिए अविलंब त्याग दीजिए। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

चंडीदत्त रचना-समग्र

अपने छोटे से जीवन में ही चंडीदत्त शुक्ल ने पत्रकारिता के साथ साहित्य लेखन में भी अलग पहचान बना ली थी। उनकी उपलब्ध अठहत्तर कविताओं, कहानियों और साक्षात्कार का संकलन 'चंडीदत्त रचना समग्र' पुस्तक के रूप में हाल में प्रकाशित हुआ है। इन रचनाओं से गुजरते हुए उनकी साहित्य की गहरी समझ और नई दृष्टि से रचने की प्रतिभा प्रमाणित होती है। 'जब मन का हर डर मर जाए', 'हंसती खेलती औरत', 'सो जाओ कि रात बहुत गहरी है' जैसी अनेक कविताएं और 'फिर आना अखिलेश और हंसना जोर-जोर से..', 'एक आंसू गुनगुनाता रहा रात भर' जैसी कहानियां उनके क्रिएटिव रेंज की तस्दीक करती हैं। पुस्तक में संकलित साक्षात्कार में उन्होंने अपने आरंभिक जीवन और साहित्यिक सरोकार पर बेबाक विचार भी व्यक्त किए हैं। साहित्य से आम लोगों की बढ़ती दूरी के बारे में चंडीदत्त के यह विचार ध्यान देने योग्य हैं, 'इन दिनों बहुतेरा साहित्य अमूर्त भाषा और भाव के साथ लिखा जा रहा है, जिससे जुड़ पाना सामान्य पाठक के बस का नहीं है।' *

पुस्तक: चंडीदत्त रचना-समग्र, **संपादक:** डॉ. शैलेंद्र नाथ मिश्र-राजेश ओझा, **मूल्य:** 299 रुपए, **प्रकाशक:** श्वेतवर्णा प्रकाशन, नई दिल्ली, नोएडा

लघुकथा / गोविंद भारद्वाज

मजदूर

भाई साहब पिछले हफ्ते जिस लड़की को हम लोग देखने गए थे, उस लड़की का सिविल सेवा में चयन हो गया है। अब तो रिश्ता पक्का कर दीजिए।' गोपी बाबू के छोटे भाई ने कहा।

'नहीं छोटे, वह लड़की हमारे घर की कभी बहू नहीं बन सकती।' गोपी बापू ने कहा।

'क्यों भैया क्या दोष है उस बच्ची में?' छोटे ने पूछा। 'दोष उसमें नहीं उसके पिताजी में है।' गोपी बापू ने पलटकर कहा। 'कौन सा दोष.. कैसा दोष भैया?' 'उसके पिताजी हमारे ही कारखाने में मजदूर हैं।' नथुने फुलाते हुए गोपी बापू ने कहा। इस पर छोटे ने कहा, 'यह तो अच्छी बात है। मेहनती बाप की मेहनती बेटी अपने घर की बहू बनेगी।' छोटे भाई ने समझाया। 'नहीं छोटे, हम अपने मजदूर को अपने बराबर नहीं बैठा सकते। उसको अपना समधी नहीं बना सकते। उसके पसीने की बदबू हमारे बदन का इत्र नहीं बन सकती।' गोपी बापू ने दलील दी। उसी समय मोबाइल की घंटी बजी। उधर से आवाज आई, 'हैलो गोपी बाबू, सिटी अस्पताल आ जाइए तुरंत। आपके बेटे का एक्सीडेंट हो गया है।'

'अरे..अभी आया।' गोपी बापू ने माथे का पसीना पोंछा फिर घबराते हुए अस्पताल भागे। अस्पताल पहुंचकर जो दृश्य गोपी ने देखा, उसे देखते रह गए। दरअसल, वही मजदूर उनके लड़के को अपना खून दे रहा था, जिसको वे अपने बराबर बैठाना नहीं चाहते थे। *

हो सकता है आपने कुछ नेशनल पार्क और वाइल्ड लाइफ सेंक्चुरी की यात्रा की हो। लेकिन अगर आप दुनिया के सबसे अनूठे नेशनल पार्क का अनुभव लेना चाहते हैं तो आपको मणिपुर स्थित तैरते हुए नेशनल पार्क कीबुल लामजाओ की यात्रा करनी होगी। इस अनोखे नेशनल पार्क की विशेषताओं के बारे में जानिए।

दुनिया का एकमात्र तैरता हुआ नेशनल पार्क कीबुल लामजाओ

टूरिस्ट प्लेस
समीर चौधरी

मणिपुर की लोकटक झील के दक्षिण हिस्से में कीबुल लामजाओ नेशनल पार्क यानी राष्ट्रीय उद्यान है, जोकि दुनिया का एकमात्र तैरता हुआ नेशनल पार्क है। मणिपुर के विष्णुपुर जिले में, इंफाल से लगभग 50 किमी. की दूरी पर यह पार्क 40 वर्ग किमी. में फैला हुआ है और यह लुप्तप्राय संगाई हिरण (नृत्य करने वाला हिरण) का अकेला प्राकृतिक घर है। यह उद्यान न केवल पर्यावरण के लिए महत्वपूर्ण है बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था (मत्स्य पालन, जल विद्युत) के लिए भी मायने रखता है।

जैव-विविधता से भरपूर: कीबुल लामजाओ राष्ट्रीय उद्यान, जैवविविधता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यह अपनी विशिष्ट तैरती फुमदिस और यहां खास तौर से पाए जाने वाले संगाई हिरण के लिए भी विख्यात है। फुमदिस सड़ी-गली वनस्पतियों, मिट्टी और जड़ों का तैरता हुआ समूह होता है। यह झील के पानी के ऊपर तैरता रहता है, जिसमें 450 से अधिक जलीय वनस्पतियों की प्रजातियां, जंगली सूअर, हॉग हिरण, बड़ी भारतीय सिवेट जैसे जीव पाए जाते हैं। नवंबर से मार्च के बीच इस पार्क में प्रवासी पक्षी भी आते हैं, इसलिए यात्रा करने का यही सबसे अच्छा समय माना जाता है।

अपने-आप में अनूठा राष्ट्रीय उद्यान: कीबुल लामजाओ राष्ट्रीय उद्यान, एक ऐसी जगह है, जहां प्रकृति ने अपने नियम नए सिरे से लिखे हैं, जिसकी वजह से नाजुक, तैरता हुआ एक अजूबा भूखंड बन गया है। इस अलौकिक लैंडस्केप में मणिपुर का नृत्य करने वाला संगाई हिरण घूमता हुआ दिखता है, जिसके तेज गति से दौड़ते कदम, तैरते घास के मैदान पर बहुत आकर्षक लगते हैं। एक जमाना था जब यह माना जाने लगा था कि संगाई हिरण विलुप्त हो गया है। ऐसे में यहां उनके बचे रहने की संभावना ने नई उम्मीद को जगाया है, दरअसल, अनोखी प्राकृतिक संरचना फुमदिस की स्थिरता का यहां के जीवों के लिए बहुत महत्व है। न सिर्फ हिरण के लिए बल्कि उस पूरे ईकोसिस्टम के लिए भी, जो पृथ्वी पर कहीं और है ही नहीं।

बढ़ रही नाचते हिरण की संख्या: सन् 1954 तक यह मान लिया गया था कि संगाई हिरण की प्रजाति लुप्त हो गई है। संगाई तैरते फुमदिस के अतिरिक्त कहीं भी जीवित नहीं रह सकता है। इसकी वजह शिकार और फुमदिस का खत्म होना माना गया। इसके लगभग दो दशक बाद सन् 1974-75 के बीच किए गए हवाई सर्वे के दौरान उम्मीद की किरण जागी। कीबुल लामजाओ के तैरते फुमदिस में लगभग 14 संगाई देखे गए, जिसकी वजह से इनके संरक्षण प्रयासों में नया जोश आया और सन् 1995 तक इनकी संख्या बढ़कर 155 हो गई, जो सन् 2016 में 260 तक पहुंच गई। तैरते फुमदिस पर संगाई की नजाकत भरी चाल ने ही इसे 'नाचते हिरण' का नाम दिया है।

इसलिए मिला राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा: संगाई की खोज के बाद ही भारत सरकार और मणिपुर की सरकार ने वन्यजीवन संरक्षण कानून 1972 के तहत 1977 में कीबुल लामजाओ को 'राष्ट्रीय उद्यान' (नेशनल पार्क) घोषित किया। संगाई हिरण और उसके प्राकृतिक आवास स्थल यानी फुमदिस के लिए यह कानूनी सुरक्षा जरूरी थी। संगाई केवल एक प्रजाति नहीं है बल्कि सांस्कृतिक जड़ों वाला पशु है, जिसने हजारों वर्षों के दौरान तैरते फुमदिस पर रहने के लिए खुद को ढाल लिया है और यह लैंडस्केप व मणिपुर के लोगों के बीच गहरे संबंध को प्रतिबिंबित करता है।

मौजूद हैं कई चुनौतियां: इस अनोखे राष्ट्रीय उद्यान के समक्ष कई इकोलॉजिकल चुनौतियां हैं। लोकटक हाइड्रोइलेक्ट्रिकल प्रोजेक्ट कृत्रिम रूप से पानी के स्तर को नियंत्रित करता है, जिससे फुमदिस चक्र बाधित होता है और यहां के तैरते हुए ईकोसिस्टम की स्थिरता के लिए खतरा उत्पन्न होता है। गौरतलब है कि कीबुल लामजाओ राष्ट्रीय उद्यान को परिभाषित करने वाला फीचर उसका तैरता इकोसिस्टम ही है, जो संगाई को जीवित रखने के लिए आवश्यक है। एक ताजा अध्ययन में मणिपुर के इस आइकॉनिक हिरण के भविष्य को लेकर गंभीर चिंताएं व्यक्त की गई हैं। क्लाइमेट चेंज की वजह से 2070 तक फुमदिस सिकुड़ जाएगा और जब फुमदिस नहीं होगा, तो संगाई का अस्तित्व भी खतरे में पड़ जाएगा। *

फुमदिस से जुड़े दिलचस्प तथ्य

फुमदिस वनस्पति, मिट्टी आदि की तैरती हुई मोटी परत होती है, जोकि जलीय पौधों और अन्य चीजों से मिलकर हजारों वर्षों में तैयार होती है। यह संगाई एवं अन्य वन्यजीवों को चरने की जगह, प्रजनन स्थल और आवास प्रदान करती है। दिलचस्प यह है कि फुमदिस प्राकृतिक जल चक्र है यानी यह झील के तले तक डूब जाती है पौष्टिक तत्व जज्ब करने के लिए। फिर कुछ समय बाद ऊपर उठ जाती है। यह चक्र उसके बने रहने के लिए आवश्यक है। फुमदिस केवल वनस्पति का टुकड़ा नहीं है बल्कि जीवित स्ट्रक्चर है। यह एक मोटी परत होती है, जिस पर बड़े जानवर भी रहते हैं। इस पर जो घास उगती है वह पूरे साल यहां निवास करने वाले वन्य जीवों को आवश्यक पौष्टिक तत्व प्रदान करती है।

सेल्फ इंप्रूवमेंट
शिखर चंद जैन

कई बार लोग प्रतिभावान और क्षमतावान होते हुए भी एक सीमित दायरे से बाहर निकलकर कुछ बड़ा अचीव नहीं कर पाते। अगर लाइफ में कुछ बड़ा हासिल करना है तो अपनी क्षमताओं को पहचान कर उसे एक्सप्लोर करना जरूरी है। यह कैसे होगा, बता रहे हैं आपको।

अपनी छिपी स्ट्रेंथ को ऐसे करें एक्सप्लोर

हम अकसर अपने आपको एक मानसिक दायरे में बंद कर लेते हैं और फिर कुएं के मेंढक की तरह उस दायरे से बाहर निकलने की कोशिश ही नहीं करते। स्वयं द्वारा निर्मित अपनी मानसिक शारीरिक सीमाओं को अपनी वास्तविकता मान लेते हैं, जबकि वे केवल हमारे विचारों की उपज होती हैं। ऐसे में हम आगे नहीं बढ़ पाते। आगे बढ़ने और तरक्की करने के लिए जरूरी है अपनी क्षमता को एक्सप्लोर करना। इसका अर्थ है, अपने डर के पार जाना। जब आप स्वयं पर लगे 'लेबल' हटा देते हैं, तो आप पाते हैं कि आप उससे कहीं अधिक हैं, जितना आपने कभी सोचा था।

हमारे भीतर है असीमित क्षमता: हम अपनी क्षमताओं का केवल 10 प्रतिशत ही इस्तेमाल करते हैं। यह आपने अकसर पढ़ा या सुना होगा। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि बाकी 90 प्रतिशत क्षमता का क्या होता है? वह बिना उपयोग के ही व्यर्थ के कामों में जाया हो जाती है। मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि इंसानी दिमाग की क्षमता का कोई अंत नहीं है। कैरोल ड्वेक अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'माइंडसेट' में बताती हैं, 'ग्रोथ माइंडसेट' के साथ, हम अपनी क्षमता को असीमित रूप से विकसित कर सकते हैं। जब हम यह मानते हैं कि हमारी बुद्धिमत्ता और प्रतिभा को मेहनत और सीखने के माध्यम से बढ़ाया जा सकता है, तो हम अपनी सीमाओं को तोड़कर आगे बढ़ सकते हैं।' अब्राहम मैस्लो, जो मानवतावादी मनोविज्ञान के जनक माने जाते हैं, का मानना था कि हर इंसान में आत्म-वास्तविकीकरण की क्षमता होती है। यह वह अवस्था है, जहां हम अपनी पूरी क्षमता को पहचानते हैं और उसे हासिल करते हैं। उनके अनुसार, यह हम सभी की अंतर्निहित इच्छा होती है कि हम वह बनें, जो हम बनने के लिए सक्षम हैं।

लोगों का साथ लें: हमारी क्षमता केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक भी है। आधुनिक समाजशास्त्र के प्रमुख संस्थापकों में से एक एमिल दुर्खीम का मत है कि कि हम सामाजिक संबंधों और सहयोग के माध्यम से अपनी क्षमता को बढ़ा सकते हैं। हमारे आस-पास के लोग, हमारी संस्कृति और हमारा सामाजिक माहौल हमारी क्षमताओं को आकार दे सकते हैं। दूसरों की मदद लेने से ही नहीं, उनकी मदद करने से भी हमारी क्षमताएं बढ़ती हैं। प्रमुख समाजशास्त्री मैक्स वेबर का मानना था कि अनुशासित और केंद्रित मेहनत, जो कि एक सामाजिक गुण भी है, से हम अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं और अपनी क्षमता का अधिकतम उपयोग कर सकते हैं।

कैसे करें अपनी क्षमता को एक्सप्लोर: अपनी असीमित क्षमता को एक्सप्लोर करने के लिए सबसे पहले, यह विश्वास करें कि आप में कुछ भी हासिल करने की क्षमता है। कभी भी नई चीजें सीखना न छोड़ें। नई किताबें पढ़ें और निरंतर नए अनुभव प्राप्त करें। कभी भी हार न मानें। अपनी असफलताओं से सीखें और आगे बढ़ें।

दिमाग के लचीलेपन का इस्तेमाल करें: जीनियस पैदा नहीं होते, गहन अभ्यास से जीनियस बनते हैं। प्रतिभा विकसित की जा सकती है। हमारा दिमाग लचीला होता है। इसका नियमित उपयोग और दिमागी मशक्कत करने से इसकी क्षमता निरंतर बढ़ती है। इस संबंध में जिम क्विक अपनी बेस्ट सेलर पुस्तक 'लिमिटलेस' में लिखते हैं, 'अपने दिमाग को अपग्रेड करें, कुछ भी तेजी से सीखें और अपने असाधारण जीवन को अनलॉक करें।' उनका कहना है कि हम अपनी सोच (माइंडसेट), प्रेरणा (मोटिवेशन) और तरीकों (मेथड्स) में बदलाव करके अपनी दिमागी क्षमताओं को असीमित कर सकते हैं, जिसमें सीमाओं को चुनौती देना, नींद को प्राथमिकता देना और लगातार अभ्यास करना शामिल है, ताकि हम तेजी से सीख सकें और अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें। मैं यह नहीं कर सकता, जैसे विचारों को 'मैं यह सीख सकता हूं' में बदलें। अपनी बुद्धि को स्थिर न मानें, यह बढ़ सकती है। *

अक्षय तृतीया विशेष

हिंदू पंचांग के अनुसार हर साल वैशाख महीने के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को मनाया जाता है अक्षय तृतीया का पर्व। मान्यता है कि इस दिन किए जाने वाले शुभ कार्यों का अक्षय फल मिलता है। इस पर्व की महत्ता, इससे जुड़ी परंपराओं और मान्यताओं पर एक दृष्टि।

शुभ कार्यों का अक्षय फल प्रदान करती अक्षय तृतीया

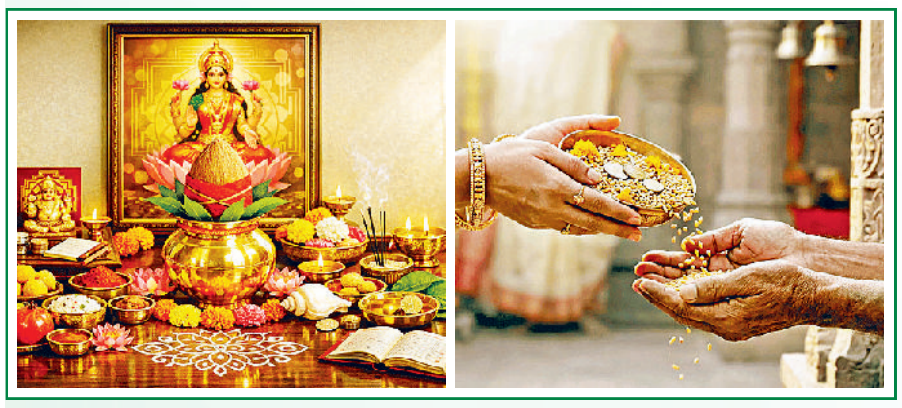

पर्व-संस्कृति
धीरज बसाक

भारतीय पंचांग में कुछ तिथियां पूरे जीवन-दर्शन को अपने भीतर समेटे रहती हैं। अक्षय तृतीया ऐसी ही एक विशिष्ट तिथि है, जो अक्षयता यानी कभी न समाप्त होने वाली ऊर्जा, पुण्य और समृद्धि का प्रतीक बनकर उभरती है।

धार्मिक-पौराणिक मान्यताएं: अक्षय तृतीया की तिथि का धार्मिक और पौराणिक आधार भी इसे विशेष बनाता है। मान्यता है कि इसी दिन भगवान विष्णु के अवतार श्री परशुराम जी का जन्म हुआ था, जो धर्म और न्याय की स्थापना के प्रतीक माने जाते हैं। यह भी मान्यता है कि इसी दिन वेदव्यास ने महाभारत की रचना आरंभ की थी, जो भारतीय सभ्यता के नैतिक और दार्शनिक आधारों को समझने का सबसे बड़ा ग्रंथ है और इसी दिन भगवान श्रीकृष्ण ने अपने मित्र सुदामा द्वारा सच्चे भाव से दिए गए एक छोटे से दान के बदले उन्हें दो 'लोक' प्रदान कर दिए थे। इन सभी कथाओं का सार यही है कि निःस्वार्थ भाव से किया गया कर्म कभी नष्ट नहीं होता।

सिखाती है जीने का संतुलित तरीका: भारतीय संस्कृति में यह विचार बहुत गहराई तक समाया हुआ है कि संसार की हर भौतिक वस्तु नश्वर है। लेकिन सत्कर्म, करुणा और धर्म के फल अक्षय होते हैं। अक्षय तृतीया इसी शाश्वत सत्य का उत्सव है। यह तिथि हमें याद दिलाती है कि जीवन में किए गए अच्छे कर्म, दान, सद्भाव कभी व्यर्थ नहीं जाते, वे किसी न किसी रूप में अक्षय बने रहते हैं। यह हमें केवल पूजा-पाठ की संस्कृति ही नहीं सिखाती बल्कि जीवन जीने का एक संतुलित और संवेदनशील तरीका भी सिखाती है।

कृतज्ञता व्यक्त करने का दिन: अक्षय तृतीया पर्व जिस समय मनाया जाता है, वह रबी की फसल के पकने का समय होता है। खेतों में सुनहरी बालियां लहलहा रही होती हैं और किसान अपनी नई फसल को भगवान को अर्पित करते हैं। यह केवल एक धार्मिक क्रिया नहीं बल्कि मानव और प्रकृति के बीच संतुलन और सम्मान का प्रतीक है। भारतीय संस्कृति में प्रकृति को माता के रूप में देखा गया है और अक्षय तृतीया, प्रकृति के उस मातृत्व के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर भी है।

धार्मिक-सामाजिक-आर्थिक महत्व: अक्षय तृतीया के दिन सोना खरीदने की परंपरा केवल भौतिक समृद्धि का प्रतीक नहीं है बल्कि इस विश्वास का प्रतीक भी है कि आज किया गया निवेश भविष्य में स्थाई फल देगा। नए कार्यों की शुरुआत, गृह प्रवेश और विवाह आदि के लिए इस दिन को अत्यंत शुभ माना जाता है। विशेष बात यह है कि इस दिन किसी विशेष मुहूर्त की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि पूरा दिन ही शुभ-मुहूर्त वाला होता है।

दान-पुण्य और सेवा का संदेश: अक्षय तृतीया का महत्व केवल सोने-चांदी, आभूषणों या अन्य भौतिक वस्तुओं की खरीदारी तक ही सीमित नहीं है। इस दिन अन्न, जल, वस्त्र और कलश के दान करने की भी प्रथा है। गर्मी के मौसम में जरूरतमंदों को पानी पिलाना, भूखों को भोजन कराना, इस दिन ये सभी कार्य अत्यंत पुण्यदायी माने जाते हैं। ये परंपराएं हमें सिखाती हैं कि समाज में समृद्धि तभी अक्षय हो सकती है, जब हर किसी का उसमें हिस्सा हो। अक्षय तृतीया इसी सांस्कृतिक दर्शन के संतुलन का नाम है, जो बताती है कि सिर्फ भौतिक प्रगति ही पर्याप्त नहीं है बल्कि आध्यात्मिक और नैतिक विकास भी उतना ही जरूरी है।

शुभ कर्मों से मिलता है अक्षय फल: अक्षय तृतीया भारतीय संस्कृति की उस गहरी परंपरा से नाता रखती है, जहां धर्म, अर्थ, प्रकृति और समाज, चारों का सुंदर समन्वय होता है। यह तिथि हमें यह विश्वास दिलाती है कि हमारे कर्म सही दिशा में हैं, तो उनका फल कभी समाप्त नहीं होगा। वास्तव में यही अक्षयता का वास्तविक दर्शन है। एक ऐसा जीवन, जिसमें अच्छाई निरंतर प्रवाहित होती रहे। इस प्रकार देखें तो अक्षय तृतीया केवल एक पर्व नहीं बल्कि प्राचीन भारतीय जीवन-दर्शन की आत्मा का मूल है, जो हमें सिखाती है- जो भी शुभ करो, वह सदा के लिए अक्षय हो जाता है। *

प्रवृत्ति
शाहिद ए. चौधरी

ज्ञान-संस्कृति-विचारों की नई खिड़की खोलती हैं किताबें

भले ही पढ़ने और लिखने की नई-नई तकनीकें विकसित हो चुकी हैं, लेकिन किताबें हाथ में लेकर पढ़ने का सुख अनोखा होता है। पुस्तक पढ़ने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करने और कॉपीराइट के प्रति जागरूक करने के लिए ही **23 अप्रैल को विश्व पुस्तक, कॉपीराइट दिवस** मनाते हैं। इस दिवस की महत्ता पर एक नजर।

किताबें खिड़की की तरह होती हैं, जिसमें से दिखाई देता है एक नया संसार। हर नए पृष्ठ के साथ किताबें परिचित कराती हैं- नए लोगों से, नई संस्कृतियों से और नए विचारों से। गांधीजी ने कहा था, 'विचारों के युद्ध में पुस्तक ही शस्त्र है।' शायद यही वजह है कि ई-बुक्स के इस दौर में भी अनेक लोगों को अच्छे कागज पर छपी, जिल्द में बंधी, किताब अपने हाथों में लेकर पढ़ना ही अच्छा लगता है। हालांकि ऐसे लोगों को शायद आज परंपरागत मूल्यों में यथास्थिति का पक्षधर माना जा सकता है। लेकिन इससे पुस्तकप्रेमियों को कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि किताबें पढ़ने की उनकी आदत जो बन गई है।

नई पीढ़ी हो रही किताबों से दूर

पढ़ने की प्रवृत्ति को लेकर एक पक्ष यह है कि रील्स और वीडियोज की आधुनिक चकाचौंध में गुम आज की पीढ़ी तो टेक्स्ट बुक्स की तुलना में नेट के वीडियो लेक्चर्स को वरीयता देती है। यह पीढ़ी किताब पढ़ने की बजाय ऑडियो-बुक्स को सुनना पसंद करती है। क्या पढ़ने और सुनने में समान एकाग्रता बनी रहती है और बराबर का ज्ञान मिलता है? इस पर बहस हो सकती है। बहरहाल, युवा पीढ़ी किताबों से जिस अंदाज से दूर हो रही है या उसे बंद कर रही है या उसे खोलना ही नहीं चाहती है, उस पर शम्स तबरेज का यह शेर याद आता है-

अजीब किस्म की उभरी थी शक्ल लफ्जों से
किताब बंद न करता तो डर गया होता।

इसलिए मनाते हैं विश्व पुस्तक दिवस

किताबों से बढ़ती दूरी की पृष्ठभूमि में यूनेस्को की कोशिश है कि लोग किताबों को खोलें, उन्हें पढ़ें, उनमें अपनी दिलचस्पी बढ़ाएं और ज्ञानी बनें, क्योंकि किताबों से बढ़कर कोई पक्का दोस्त नहीं होता। किताबें पीढ़ियों के बीच में और संस्कृतियों के बीच में पुल का काम करती हैं। इसी तथ्य को मान्यता प्रदान करने के लिए यूनेस्को यानी संयुक्त राष्ट्र संघ हर साल 23 अप्रैल को विश्व पुस्तक और कॉपीराइट दिवस मनाता है।

इस वर्ष के लिए चयनित पुस्तक राजधानी

हर साल इस जश्न को मनाने के लिए यूनेस्को व पुस्तक उद्योग के मुख्य सेक्टर्स- प्रकाशक, पुस्तक विक्रेता, पुस्तकालयों का प्रतिनिधित्व करने वाले अंतरराष्ट्रीय संगठन मिलकर विश्व पुस्तक राजधानी का चयन करते हैं। चुना हुआ शहर सभी आयु वर्गों और सभी समाजों में किताबों और पढ़ने की संस्कृति को प्रोत्साहित करता है, न सिर्फ मेजबान देश में बल्कि पूरे विश्व में। यूनेस्को ने अब तक 26 विश्व पुस्तक राजधानियां घोषित की हैं, जिनकी शुरुआत 2001 में मेड्रिड (स्पेन) से हुई थी। इस वर्ष 2026 की पुस्तक राजधानी रबात (मराकश) को चुना गया है। रबात में मेन फोकस, संस्कृतियों को जोड़ने में पुस्तकों की भूमिका पर होगा। इसके अलावा इस वर्ष पुस्तक दिवस का फोकस पढ़ने के साथ साक्षरता पर भी है, जिसमें पढ़ने के घंटे को भी प्राथमिकता दी गई है। आमतौर से शाम को 7 से 8 बजे तक का समय किताब पढ़ने के लिए मुफीद माना जाता है। यानी रोजाना कम से कम एक घंटा किताब पढ़ने की प्रवृत्ति विकसित की जाए, इस पर फोकस किया जा रहा है।

नई चुनौतियां भी कम नहीं

इसके अतिरिक्त इस बात पर भी गंभीर चर्चा हो रही है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) की लेखकों के लिए प्रकाशन और कॉपीराइट सुरक्षा में क्या भूमिका होनी चाहिए? यह गंभीर विषय है और पेचीदा भी। एआई कॉपीराइट की परवाह किए बिना किसी के भी कार्य को सार्वजनिक करने की क्षमता रखती है, जिससे लेखकों व प्रकाशकों को नुकसान की आशंका रहती है। लेकिन एआई को नियंत्रित करना भी आसान नहीं है। फिर भी कोई न कोई रास्ता तो निकालना ही होगा। *

कॉपीराइट सुरक्षा पर भी केंद्रित है यह दिवस

इस दिवस को मनाने का उद्देश्य कॉपीराइट सुरक्षा को भी प्रोत्साहित करना होता है, जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है। भारत में कॉपीराइट सुरक्षा 1957 के कॉपीराइट कानून से संचालित होती है, जिसके तहत स्वतः ही मूल साहित्य, नाटक, संगीत, सिनेमेटोग्राफ फिल्म्स/साउंड रिकॉर्डिंग्स सुरक्षित हो जाती हैं। सुरक्षा के लिए पंजीकरण आवश्यक नहीं है, लेकिन विवाद की स्थिति में प्रथम दृष्टया इसे साक्ष्य माना जाता है। कॉपीराइट सुरक्षा आमतौर से लेखक के जीवनकाल और उसके बाद अतिरिक्त 60 वर्षों तक लागू रहती है। यह 60 साल लेखक की मृत्यु के दिन से गिने जाते हैं। कानूनी साक्ष्य के लिए पंजीकरण करा लेना चाहिए, भले ही वह वैकल्पिक हो। इसके लिए कॉपीराइट ऑफिस में अप्लाई करना होता है। फोटोग्राफ, फिल्म, साउंड रिकॉर्डिंग, अज्ञात व सरकारी कार्य का कॉपीराइट प्रकाशन के बाद 60 वर्षों तक रहता है। इस दौरान लेखक को एक्सक्लूसिव अधिकार होता है, अपने कार्य के पुनः प्रकाशन, कापियां जारी करने, परफॉर्म करने, अनुवाद करने या एडॉप्ट करने का। कॉपीराइट उल्लंघन की स्थिति में दोनों दीवानी (मुआवजा), आपराधिक सजा (6 माह से 3 वर्ष की कैद और जुर्माना) का प्रावधान है। सेक्शन 52 के तहत कॉपीराइट उल्लंघन के अपवाद हैं जैसे निजी प्रयोग, शोध, आलोचना, समीक्षा या रिपोर्टिंग।